॥ श्री सुरभ्यै नमः ॥

मासिक

कामधेनु कल्याण

पत्रिका

जून 2026

वर्ष : 03, अंक : 03

Website: www.godhampathmeda.org Email: k.k.p.pathmeda@gmail.com

सुरभि उवाच

हे मेरे प्यारे भारतवासियों !

मैं तुम्हारी आदि शक्ति सुरभि गोमाता अपने वंश के प्रति तुम्हारे क्रूर व्यवहार के कारण तुमसे बहुत हताश, निराश और असंतुष्ट हूँ। जिसके शरीर में तुम ३३ कोटि देवताओं का वास मानते हो, जिसके दूध से तुम अपने बच्चों को पालते हो और जिसके घी से देवताओं को आहुति देते हो, वह गाय मेरी ही वंशज है। आज मैं अपनी व्यथा, अपना कंद्रन और अपनी आत्मा की चीख लेकर तुम्हारे बीच आई हूँ।

इस समय देश की धरती आग उगल रही है। आसमान से बरसती इस भीषण गर्मी और लू में तुम्हारी आत्मा ए.सी. और कूलर के कमरों में भी कांप उठती है, लेकिन जरा खिड़की से बाहर झांककर देखो, मेरी छाती के टुकड़े, मेरे प्यारे मासूम बछड़े आज सड़कों पर किस हाल में भटक रहे हैं ? क्या मेरा दूध पीना और फिर मेरी ही संतान को निराश्रित कर देना तुम्हारी इंसानियत है ?

जब तक मेरे वंश के थनों में दूध था, तुमने उसे पूजा। जैसे ही दूध सूखा या बछड़े ने जन्म लिया, तुमने उसे पराया कर दिया। ४५ डिग्री से ऊपर की इस कांपती धूप में, जलती हुई डामर की सड़कों और तपती रेत पर मेरे भूखे-प्यासे बछड़े नंगे पैर भटकने को मजबूर हैं। न सिर ढ़कने को कहीं छांव है, न पीने को पानी की एक बूंद और न ही क्षुधातृप्ति हेतु चारे का एक तिनका ही। ऐसी स्थिति में भूख, प्यास और कमजोरी से निढ़ाल होकर मेरा बछड़ा जहाँ बैठता है, वहीं तपती धरती पर तड़प-तड़प कर अपने प्राण त्याग देता है। जो थोड़े बहुत चल पाते हैं, वे अंधेरे में तेज रफ्तार वाले वाहनों की चपेट में आकर अकाल मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं, उनका लहुलुहान शव घंटों सड़क पर पड़ा रहता है और तुम गाड़ियों में बैठकर पास से गुजर जाते हो। इनके बाद भी कोई बच जाते हैं तो उनको कसाई पकड़ लेते हैं और बहुत ही दर्दभरी मौत मारते हैं।

हे भारत वासियों ! बिना सोचे-समझे अपने स्वार्थ के लिए किया जा रहा यह कृत्य कोई साधारण भूल नहीं, बल्कि एक जघन्य अपराध और महापाप है। मूक प्राणियों को इस तरह भूख-प्यास से तड़पाकर मारना गोहत्या ही है। मेरी आँखों से बहने वाला आंसू और मेरे बछड़े के गले से निकली आखिरी मूक चीख, इस पाप को करने वालों को इसी जन्म में रो-रोकर भुगतनी पड़ेगी। उसकी यह मूक हाय आपके पूरे वंश को नष्ट कर सकती है।

हे देशवासियों ! मैं तुम्हें चेतावनी भी दे रही हूँ और एक माँ की हैसियत से तुम्हारे हित के लिये भी कह रही हूँ। यदि तुम मेरे वंश का दूध पीते हो तो मेरे बछड़े को अपने घर से मत निकालो। अपने घर, दुकान और खेतों के बाहर पानी की नाद (खेल) हमेशा भरकर रखो ताकि कोई बेजुबान प्यासा न मरे। यदि सचमुच आप में एक बछड़े को पालने की सामर्थ्य नहीं है, तो उन्हें सड़कों पर छोड़ने की बजाय सम्मानपूर्वक किसी गौशाला में सौंपकर आओ। ईश्वर के यहाँ कर्मों का बहीखाता बहुत ही साफ है- जैसा करोगे, वैसा भरोगे। यदि मुझे सचमुच माँ मानते हो, तो मेरे बछड़ों को निराश्रित छोड़कर कसाई मत बनो। इस भीषण गर्मी में संवेदनशीलता दिखाओ, अपने स्वार्थ का परित्याग करो और इस घोर पाप के भागीदार बनने से बचो।

तुम्हारी शुभचिन्तक
सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम्।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष: 3

कामधेनु-कल्याण

अंक: 3

ज्येष्ठ (अधिक) मास कृष्ण पक्ष वि.सं. 2083 रा.शाः 1948 जून –2026

1. **गोसेवा के लिये भगवान अवतार लेते हैं** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 04
2. **प्रार्थना क्या है व आत्मा का संबंध किससे है**– परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 08
3. **जय गोमाता (कविता)** – श्री राजीव गुप्ता पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश गोसेवा आयोग 10
4. **श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 11
5. **श्री रामायण में गोमहिमा** – संकलित 14
6. **ठाकुरजी कब आओगे** – भगवत प्रेरणा से 16
7. **तू ही तू** – परम् श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज 19
8. **श्री मदभागवत कथा** – पूज्य द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 21
9. **श्री राम कथा** – पूज्य आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज 24
10. **श्री शिव महापुराण कथा** – पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज 27
11. **सनातन धर्म** – अम्बा लाल सुथार, सम्पादक 30
12. **संस्था समाचार** – मई माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण 32

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041
Mob. No. 9828052638
k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक
अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

गोसेवा के लिये भगवान अवतार लेते हैं

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

(सुरभि संसद दिनांक 16.01.2026 में प्रदान किया गया आशीर्वाद)

......पिछले अंक से आगे

........पत्रिका के संवाददाता को हमने कहा कि 10 दिन में एक हजार गाएं मरी है। हरिजन रो रहे हैं। जैसा आप देख रहे हो, जैसा दृश्य है वैसा ही आप छाप देना। उन्होंने छाप दिया। गुजरात के केशुभाई पटेल मुख्यमंत्री थे और सुन्दरसिंह जी भंडारी राज्यपाल थे वे पहले पथमेड़ा आ चुके थे। उन्होंने कहा कि महाराज जी को यहाँ ले आओ हम कुछ गोसेवा करेंगे। हम वहाँ गए, उन्होंने सहयोग किया। गुजरात के कैंपों में गुजरात सरकार ने मदद शुरू की और थोड़े ही दिनों में अटल जी ने अशोक जी सिंघल को कहा कि हमारे घुटनों में दर्द है। हमको पथमेड़ा जाना है क्या करें, जा नहीं पा रहे हैं। आप उन महाराज जी को बुला सकते हो क्या? अशोकजी ने खूब आग्रह किया कि आप चलेंगे तो गाय का कुछ काम होगा।

उसके पहले अचानक स्वामीजी श्री रामसुखदासजी महाराज सूरत आए और सूरत से अहमदाबाद आकर बोले कि मुझे पथमेड़ा जाना है। एकदम विकट परिस्थिति में वे पथमेड़ा आए और दो रात रुके। हमने स्वामीजी को खूब सुनाया। उन्होंने प्रवचन में कहा कि पानी है छाया है पर चारा नहीं है। पैसों का मेरे कभी काम पड़ा नहीं। तो हमने कहा आपके कभी पैसों का काम नहीं पड़ा, तो हमारे पैसों का कब काम पड़ा? अभी तक तो हम देख रहे थे इसलिए हम इसको छोड़कर पलायन नहीं कर सकते थे, पर अब आपने सब देख लिया है तो हम आपसे पहले कमण्डलु लेकर रवाना होंगे। स्वामीजी ने हमको कहा- सब ठाकुरजी मंगल करेंगे, आप कहीं नहीं जाओगे। हम पालनपुर तक स्वामीजी को छोड़ने गये। स्वामीजी को शाम की भिक्षा पालनपुर करवाई। स्वामीजी ने अहमदाबाद जाकर सबको बुलाया और व्यक्तिगत रूप से कहा। विश्व हिन्दू परिषद के पूर्व अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विष्णु हरि डालमिया के छोटे भाई यदु हरि डालमिया को बुलाकर भेजा पथमेड़ा, वो आए। जिंदल परिवार के लोगों को भेजा। भविचंदजी जी जिंदल और शिवकुमार जी आए। स्वामीजी ने व्यक्तिगत रूप से केवल पथमेड़ा के लिये कहा, जीवन में उन्होंने कभी किसी के लिये नहीं कहा।

वो काम फिर उस समय शुरू हुआ। भारत सरकार ने भी मदद की। ट्रेनों में चारा परिवहन फ्री किया। 3 लाख गाएं पथमेड़ा के कैंपों में पली और 70 लाख गाएं उस योजना से और बची। इस तरह चार वर्ष गुजरे और गोष्ठ बनते गये। यमुना जी के किनारे जो गोष्ठ हमने उस समय देखे थे ये सब वे ही गोष्ठ थे। हम यही देख रहे थे कि भगवान की लीला से हो रहा है। लोग कह रहे थे कि महाराजजी और इनके कारण हो रहा है। हम पिछले 2-3 वर्षो से ठाकुरजी से लड़ते थे कि आप आकर किसी रूप से विराजमान हो जाओ तो लोग हमें परेशान ना करें। आप छुपे हुए रहते हो और आगे हमें करते हो यह ठीक नहीं है।

यह लड़ाई हमारी चल रही थी और पिछले वर्ष मीरा गोपाल जी का प्रयागराज और वहाँ से द्वापरयुगीन ब्रज तीर्थ करने का भाव हुआ तो हम ठाकुरजी को प्रयाग महाकुंभ में त्रिवेणी स्नान करवाकर द्वापरयुगीन ब्रजधाम पहुँचे। यहाँ मीरा गोपाल सरकार को प्रमुख-प्रमुख स्थानों के दर्शन करवाये और फिर मीरा गोपाल सरकार को उनकी दो सखियों सहित गोवर्धन चंद्रसरोवर पर एक विशेष कुंज में विराजमान करवाकर हम पथमेड़ा लौट आये। इस बात को अब

करीब 2 माह बीते कि श्री मीरागोपाल सरकार ने हमें संकेत किया कि हमें तो पुनः अभिनव ब्रज मण्डल आना है। हम अन्य गोसेवी प्रेमी संतों तथा गोभक्त कार्यकर्ताओं को साथ लेकर भगवान मीरा-गोपाल सरकार को लिवा लाने हेतु अभिनव ब्रजमण्डल से सीधे गोवर्धन स्थित चंद्रसरोवर पहुँच गए। व्रज आगमन पर व्रजवासियों ने बड़ा भावपूर्ण स्वागत सत्कार किया। श्री गोवर्धननाथजी को अभिनव ब्रज मण्डल पधराने का हमारा भाव था। रात्रि को संतों के सामने हमारा भाव प्रकट किया। इस पर पूज्य मलूकपीठ वाले महाराज जी सहित उपस्थित व्रजवासी संत महात्माओं ने अवगत करवाया कि पिछले 5000 वर्षो के इतिहास में श्रीनाथजी के अतिरिक्त गिरिराज जी से द्वापरयुगीन व्रजमण्डल से कभी कोई गोवर्धननाथजी का स्वरूप बाहर नहीं ले गया है। गोवर्धननाथजी के सवा इंच से बड़े स्वरूप को ले जाने की शास्त्रीय अनुमति नहीं है। यहाँ के इतिहास के अनुसार कोई श्रद्धालु भक्त सवा इंची गिरिराज जी की शिला का स्वरूप ले जाता है तो बदले में उनके वजन से सवागुणे स्वर्ण का यहाँ दान करके किसी व्रजनिष्ठ संत महात्मा के कर कमलों से ग्रहण करके ही ले जा सकते हैं। सवा इंच से बड़ा गिरिराज जी का स्वरूप व्रज से बाहर देने और ले जाने वाले अंधे, विकलांग, पागल होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

इसके बाद पुनः पूज्य मलूकपीठ वाले महाराज जी बोले कि कारक महापुरुष, जीवनमुक्त नित्यलीलालीन भगवद परिकर निजजन के भावों पर धर्म शास्त्र का अनुशासन नहीं चलता है। अतः श्री गोपाल कृष्ण भगवान को अभिनव व्रजमण्डल में विराजमान होकर अति विशिष्ठ गोचारण की दिव्य लीलाएं करनी होगी इसलिए अपने निज सखा के (आपके) हृदय में उक्त प्रेरणा प्रकट की होगी। चन्द्रसरोवर गोशाला के पास चंद्रसरोवर पर गो उपासक व्रजनिष्ठ संत श्रीठाकुर दास जी बाबा के इष्टदेव श्री गिरिराज जी भगवान को बनाकर विराजमान करवाए हुए हैं। हम प्रातःकाल चार बजे मीरा-माधव सरकार के अभिनव ब्रजमण्डल के विजय से पूर्व गोशाला में विराजमान श्री ठाकुरदासजी के गिरिराज जी भगवान का दर्शन व प्रणाम करके बैठ गए। एक हाथ से 6 इंच का स्वरूप लिया ही था कि अचानक एक अद्भुत लीला हुई। एक बड़े 36 इंच के गोवर्धननाथजी शिला के स्वरूप में हमारे दूसरे हाथ में फूल की तरह हल्के होकर आ गये। गोपालजी को यहाँ आना ही था।

इससे पहले क्या हुआ कि मीरा गोपाल की सखियों सुबह यहाँ आने हेतु तैयार होने के लिये स्नान आदि करने गई। एक सखी जब स्नानादि से निवृत हो लौटकर कुंज में गई तो मीरा गोपाल के आगे रथ में सांवला सलौना एक किशोर लेट रहा है। सखी ने कहा आप कौन हैं? यहाँ किसी पुरुष का प्रवेश नहीं है। आप बिना अनुमति यहाँ क्यों आए? किशोर ने उत्तर में कहा कि मैं व्रज का ग्वाल हूँ। यह सुनते ही गोवत्सा सखी के हृदय में आया कि ये श्री ठाकुरजी हो सकते हैं। ऊपर से बोली कि आप रथ से नीचे उतर जाइए और यहाँ से चले जाइए। किशोर थोड़ा नाराज होकर तिरछी नजर से देखते हुए गोशाला की तरफ जहाँ संत और हम सब रुके हुए थे उधर चला गया।

इतने में उनकी बड़ी बहन शैलजा आई तो छोटी वाली ने बड़ी बहन को बताया कि दीदी अभी ऐसे-ऐसे एक किशोर यहाँ सोया हुआ था और मैंने कहा तो वह नीचे चला गया। तो बड़ी बहन जोर से चिल्लाई- वे तो ठाकुर जी थे जो हमारे साथ आना चाह रहे थे। उनको जाने का कहकर हमने अच्छा नहीं किया। इस प्रकार सोचकर दोनों सखियों दुःखी होकर पश्चाताप करने लगी। ऐसा करके फिर वह दिन में 11.00 बजे उनके छोटे भाई के द्वारा समाचार भिजवाया कि महाराज जी को पूछो कि वे कौन थे और अब क्या हुआ? वे दोनों बहनें तो उस समय

तक भी रोती रही कि हमसे कोई अपराध हुआ क्या महाराज जी को पूछो। यह सुनकर हमारा हृदय भर गया। हमारा कंठ भी अवरोधित हो गया। हम बोल नहीं सके। फिर वापिस उसने दूसरी बार कहा कि फिर संदेश आया है वे पूछ रही हैं महाराज जी। हम इतना ही कह सके कि उनको बता दो कि वे वहाँ से चलकर हमारे साथ आ गये हैं और हमारे साथ बस में ही है।

हमारा यह विश्वास है कि वह जो किशोर यहाँ आने के लिए आतुर थे, रात में बिना बुलाए रथ में विराजे थे, वो ही किशोर हमारी गोद में आकर शिला बन गये और वो हमारे यहाँ विराजमान है। क्योंकि इस तरह की शिला वहाँ गिरिराजजी के उस भाग में भी कहीं नहीं थी जहाँ हम बैठे थे। क्योंकि वो बहुत छोटा क्षेत्र है, कहीं से भी शिला लो तो जगह का पता लग जाता है। वहाँ जो देखने वाले है उन्होंने भी देखा है और वहाँ के लोगों को हमने भी कहा है कि वहाँ से इतनी बड़ी शिला कोई हटी हुई है क्या? वहाँ एक-एक शिला जमा कर रखी हुई है, एक टुकड़ा भी हटता तो पता लग जाता। तो वहाँ जो देखने वाले हैं उन्होंने कहा महाराज जी यहाँ से तो एक टुकड़ा भी कम नहीं हुआ है। हमारे गणेश जी वहीं थे।

तो वे ब्रज किशोर जी ही थे और फिर हम लोग वहाँ से नाथद्वारा गये। देवजी को हमने वहाँ नाथद्वारा सामने बुलाये। ये लोग सामने आए और इन्हें यहाँ लेकर आए। शाम को हम लोग प्रवेश द्वार पर आए तो सारे गोष्ठों की गाएं रम्भाने लगी और दोनों तरफ से गाएं आतुर होकर दौड़-दौड़कर बस के अन्दर गिरना चाहती थी। वृद्ध-वृद्ध गाएं खेल रही थी, कूद रही थी, नाच रही थी। हमारे हीरसिंह बता रहे थे कि शाम को तो ग्वाले भी थक जाते हैं, आज तो ग्वालों में भी बहुत उत्साह था, गाएं भी ऐसा कर रही थी। उनके आगमन के बाद में यहाँ की छटा अलग हो गई है, यहाँ का स्वरूप अलग हो गया है। यहाँ के वृक्ष, लताएं आदि सब कुछ बदल गये हैं।

भगवान द्वापर युग में द्वारिका से हस्तिनापुर जाते तो इसी रास्ते से चलते थे और यहाँ इनका ठहराब होता था। भगवान केशव यहाँ रुकते थे, उस केशव का अपभ्रंश होकर केशुआ बना और केशुआ के ठाकुर साहब हरिसिंह जी यहाँ बिराजे हैं जिन्होंने यह जमीन दान में दी है जिससे यह अभियान आगे बढ़ा। भगवान की बहन जो यशोदा जी के यहाँ जन्मी थी योगमाया वैसे तो विंध्यवासिनी विंध्याचल में रहती है ऐसा कहते हैं पर मेरा विश्वास और मुझे जो कुछ दिखा उसी के आधार पर बता रहा हूँ कि वो योगमाया इसी पर्वत में रहती थी, ठाकुरजी अपने साथियों के साथ यहाँ रुकते थे। बाकी सब यहाँ रुकते और ठाकुरजी अकेले इस रास्ते से अपनी बहन से मिलने जाते थे।

बहन योगमाया का आग्रह था कि भैया यहाँ एक ब्रज बनाओ। भगवान ने बहन योगमाया को वचन दिया था कि कलियुग में यहाँ ब्रज बनेगा और मेरा मीरा के साथ अर्चवतार में विवाह करूंगा उनके उस वचन के कारण ही भगवान ने यहाँ मीराजी के साथ विवाह किया। भगवान की बारात आई और लाखों लोग आए। ये मगनीरामजी और आप सब बिराजे हो, आपने निमंत्रण दिया तो आपको भी पता नहीं कि कितने लोग आयेंगे। जितनी इनकी कल्पना रही होगी उससे सैंकड़ों गुणा अधिक लोग आए। आसपास के क्षेत्र- रानीवाड़ा, रेवदर, मण्डार ये सब भर गये थे। क्षेत्र की सारी सड़के जाम हो गई थी। सारे फोन बन्द हो गये। गोवत्स राधाकृष्णजी आए, रघुनाथसिंहजी आए बोले महाराज जी कहीं किसी से सम्पर्क नहीं हो रहा है। हमने कहा हरि-हरि करो।

चार-पाँच घण्टे यह स्थिति रही बाद में भीड़ कम हुई। वो शायद द्वापर में भी श्रीकृष्ण भगवान के विवाह का ऐसा कार्यक्रम नहीं हुआ होगा, ऐसा यहाँ

कार्यक्रम बिना योजना के हुआ था। यह बात हमने इसलिये बताई कि गोपाल जी वे ही हैं। हमको प्रेरणा मिली है गुरुदेव से कि इन्हीं गोपालजी का एक गो गोपाल कॉरिडोर बनाना है, जिसमें बीच में गोपालजी और चारों तरफ वेदलक्षणा गोमाताएं होगी और यह सब ग्रेनाइट के पाषाण में तैयार किया जाएगा। वैदिक काल से लेकर अभी तक का जितना इतिहास है गोपालन लोक संस्कृति का उसको ग्रेनाइट पर उकेरा जाएगा। 108 गोमाता के मंदिर और 108 भगवान के अवतार, ऋषि-मुनि, गोभक्तों और राजाओं के स्मृति मंदिर होंगे और बीच में निज मंदिर होगा भगवान गोपाल का।

तो उसके लिए वह गो गोपाल कॉरिडोर और सुरभि विश्वविद्यालय की परियोजनाएं इस परिसर में लगभग 4000 बीघा जमीन है उसमें स्थापित करने का भाव है। गाय के विषय में सम्पूर्ण जानकारी धरती पर कहीं एक जगह मिले तो उसके लिये लोग यहाँ आ जाय, प्रवेश करे और सभी जानकारियों से संपन्न होकर बाहर जाए, ऐसा कॉरिडोर और उसके चारों तरफ आठ महाविद्यालय हो। यह जमीन उसके लिये ली गई थी। उसी कार्य को हमें अब आगे बढ़ाना है।

गोमाता हमारी पृथ्वी को विषमुक्त और जीवनी शक्ति से भरपूर बनाती है। गोमाता मानव जाति सहित सभी जीवों को वास्तविक जीवन प्रदान करती है। इसके लिए विश्वविद्यालय और कॉरिडोर का भाव आया। कॉरिडोर में अपने भगवान गोपाल जी का, वेद भगवान का, पंच देवों का, दशावतारों का, दिग्पाल, सप्त ऋषियों का, 33 कोटि देव, देवर्षि, ब्रह्मऋषि, राजऋषि, महर्षि, गोउपासक, गोभक्त धर्मात्मा, गोरक्षक वीर इन सबकी स्मृतियाँ और मंदिर बनवाएंगे। एक प्रधान महामंदिर होगा और इसमें बहुत बड़ा ग्रंथालय होगा, चारों तरफ विश्वविद्यालय का एक बड़ा स्वरूप होगा, यह जो सुरभि शक्तिपीठ के रूप में 108 पूजा अर्चना हेतु गोमाता के मंदिर होंगे इनके बीच-बीच में गोभक्त देवात्माओं के स्मृति मंदिर होंगे। इस धरती पर वर्तमान समय में विद्यमान वेदलक्षणा गोमाता की सभी नस्लों का संरक्षण संकलन करके यहाँ पर उन्हें रखा जाएगा। उनके पंच गव्यों पर शोध होगी, गोसंवर्धन का कार्य होगा। गोपालन लोक संस्कृति के अधिष्ठाता भगवान गोपाल गोवर्धननाथ जी मंदिर का निर्माण और गोपाल कृष्ण की गोचारण लीलाओं का पाषाण पर चित्रण होगा। गोपालन लोक संस्कृति के पुरोधा धर्मात्मा समाज एवं मनुष्यों और उदार आत्माओं का इतिहास पाषाण पर चित्रण किया जाएगा। भारतीय सनातन धर्म इतिहास, दर्शन, आयुर्वेद, अध्यात्म और विश्व मानव साहित्य में उपलब्ध पंचगव्यायुर्वेद और कामधेनु विज्ञान और गोकोष का संकलन किया जाएगा। गोमाता की विभिन्न नस्लों से प्राप्त पंचगव्यों का मानवीय स्वास्थ्य प्राकृतिक कृषि उत्पादन और पर्यावरण परिशोधन हेतु शोध, अनुसंधान और प्रयोग किया जाएगा।

सुरभि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कामधेनु महाविद्यालय, गोकृषि महाविद्यालय, संस्कृत महाविद्यालय, तकनीकी एवं इंजीनियरिंग महाविद्यालय, आदि 8 महाविद्यालयों की स्थापना होगी। हिंदी और भारतीय भाषाओं सहित वैश्विक भाषाओं में अध्ययन और अध्यापन कराया जाएगा। इस परियोजना के लिए यह 3000 बीघा भूमि लगभग तैयार हो चुकी है और इसके बीच में भगवान गोपाल के मंदिर का भूमि पूजन कर लिया है और इस महाप्रकल्प का भूमि पूजन से श्री गणेश कर दिया है।

इसके लिये गो गोपाल कॉरिडोर निर्माण समिति का गठन किया गया है। अतः इस प्रकल्प को मूर्तरूप प्रदान करने के लिये उपस्थित सभी महानुभाव संतगण अपना आशीर्वाद, मार्गदर्शन और गोभक्तजन अपना सहयोग प्रदान करें।

जय गोमाता, जय गोपाल।

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

प्रार्थना क्या है?

.....पिछले अंक से आगे

..........यद्यपि प्रेम अपवित्र नहीं है, स्वरूप से ही पवित्र है, किन्तु इसका अर्थ यह है कि प्रेम का वह भाव जिसमें प्रेमी प्रेमपात्र को ही रस देने का विचारता है वह पवित्र प्रेम है। आप कहेंगे यह रहस्य हमारी समझ में नहीं आया तो भाई इस रहस्य को समझने के लिए कुछ प्रेमियों के चरित्र पर दृष्टि डालनी होगी। आप भले ही उसे कहानी मानना यद्यपि वो बात हमने कही है। हम आगे आने वाली जो हमारी सत्संग है, सत् चर्चा है उसमें प्रेम के गहरे रहस्य को समझाने के लिए कुछ भगवत प्रेमियों के चरित्र की चर्चाएं करेंगे उससे पवित्र प्रेम का रहस्य और अधिक प्रकट होगा और खुलेगा। अब हरिनाम संकीर्तन और प्रार्थना के साथ आज की सत् चर्चा को यहीं विराम देते हैं और प्रभु से तथा गैया मैया से प्रार्थना करते हैं कि भगवत प्रेम के पवित्र विशेषण का रहस्य हम लोग समझकर अपने जीवन में पवित्र प्रेम को अपनावे। इसी सद्भाव के साथ श्रीराम जय राम जय जय राम-2 !

आत्मा का सम्बन्ध किससे है?

जो अपना होता है वह मीठा लगता है और अपनापन सुरक्षित होता है चाह रहित होने से। अगर हम भगवान से कुछ चाहेंगे तो भगवान में अपनापन सुरक्षित नहीं रहेगा क्योंकि चाह के अनुसार कभी कुछ मिलेगा कभी नहीं मिलेगा। नहीं मिलेगा तो अपनापन कमजोर होगा या नहीं रहेगा। जो अपने पास है उसे दे डालने से, उसको देने से अपनापन सुरक्षित होता है। जो कुछ अपने पास है, वो उसी का ही है। जो कुछ अपने पास है, वह है किसी का दिया हुआ। जिसका दिया हुआ है उनको सब कुछ समर्पित करने से अपनापन सुरक्षित रहता है। इसी से नित्य संबंध और जातीय एकता होती है। पूरा समर्पण करने से उस प्रभु से नित्य संबंध हो जाता है जिनसे हमारी जातीय एकता है।

जातीय एकता का अर्थ यह नहीं है कि हम ब्राह्मण हैं, हम वैश्य हैं तो हमारी जातीय एकता वैश्यों से हो गई, बणिकों से हो गई। असली अर्थ में हमारी जातीय एकता उससे हो सकती है जिसके और हमारे बीच में स्वरूप की भिन्नता ना हो। उदाहरण के लिए यदि किसी से पूछा जाए कि क्या आप वही हैं जो 25 वर्ष पहले थे? तो वह कहेगा कि मैं वही हूँ। विचार करें उसमें परिवर्तन नहीं हुआ? परिवर्तन हुआ है- शरीर में, स्थिति में, भावनाओं में, विचारों में, प्रवृत्तियों में, इन सबमें परिवर्तन हुआ है। तो जिसमें परिवर्तन हुआ है वह उसकी जाति का नहीं है, जिसमें परिवर्तन नहीं हुआ वह उसकी जाति का है।

इसका अर्थ यह हुआ कि हम और हमारे शरीर में जातीय एकता नहीं है। क्यों? क्योंकि हम तो 25 वर्ष पहले थे वही आज है, पर शरीर बदल गया, मन बदल गया, बुद्धि बदल गई, प्रवृति बदल गई। तो जो बदल गया है वह बदलने वाली जाति का है, और जो नहीं बदला वह नहीं बदलने वाले की जाति का है। परिवर्तनशील मतलब है नाशवान, बदलने वाला है माने नाशवान। तो शरीर, मन, बुद्धि आदि परिवर्तनशील है और यह संसार भी परिवर्तनशील है। तो शरीर और संसार दोनों एक जाति के हुए और जो हम हैं 25 साल पहले थे वही आज हम न बदलने वाले तो न बदलने वाले हमारा संबंध न बदलने वाले

परमात्मा के साथ है। संसार में परमात्मा और शरीर में आत्मा ये दो नहीं बदलते, तो आत्मा का संबंध परमात्मा से और शरीर का संबंध संसार से है। शरीर संसार की जाति का हुआ। संसार के साथ शरीर की जातीय है एकता है और हमारी परमात्मा के साथ जातीय एकता है। हमारी हमारे प्राण, इंद्रियाँ, मन, बुद्धि से जातीय एकता नहीं है। संसार में जो कुछ इंद्रियों के ज्ञान से या बुद्धि के ज्ञान से देखने में, समझने में आता है उसमें भी कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसमें परिवर्तन ना होता हो। अतः उससे भी हमारी जातीय एकता नहीं है।

इस दृष्टि से संसार से हमारी जातीय एकता नहीं है, उससे हमारी मानी हुई एकता है। हमने मान रखा है कि हम बणिक हैं तो एक जाति के हैं, ब्राह्मण हैं तो एक जाति के हैं, यह मान रखा है। हम दिल्लीवासी हैं तो सब एक हैं, हम राजस्थान वासी हैं तो सब एक हैं, हम हरियाणा वासी हैं तो सब एक हैं, यह सब मानी हुई बातें हैं। अभी हम हरियाणा में हैं, पिछले जन्म में पंजाब में होंगे, उसके पिछले जन्म में कहीं और होंगे, अगले जन्म में कहीं और होंगे। अभी हम बणिक हैं, पिछले जन्म में हम ठाकुर होंगे, अगले जन्म में ब्राह्मण होंगे, पता नहीं किस जन्म में क्या होंगे? तो यह माना हुआ है, मानी हुई एकता है संसार के साथ, वास्तविकता नहीं है।

मानी हुई एकता के नाते हमारे पास जो कुछ संसार की वस्तु है उसे संसार को भेंट करना है। हमने अपने देश के साथ में, हम देशवासी है ऐसी एकता मान रखी है तो हमारे पास जो भी योग्यता सामर्थ्य है उसे हमें देश सेवा में लगाना है, समाज के साथ हमने एकता मानी है तो समाज की सेवा में लगाना है, परिवार के साथ में एकता मानी तो परिवार की सेवा में लगाना है। उसको भेंट करना है। उसको आदरपूर्वक सेवा में लगा देना है, अभिमान पूर्वक नहीं, आदरपूर्वक कि आपका ही था प्रभु। तेरा तुझको अर्पण।

मानी हुई एकता से कर्तव्य का जन्म होता है। जब हम शरीर के साथ एकता मानते हैं तो शरीर के प्रति जो हमारा कर्तव्य है वह जन्म लेता है, परिवार के साथ हम जब एकता मानते हैं तो परिवार के प्रति जो हमारा कर्तव्य है उसका जन्म होता है, अगर समाज के साथ एकता मानते हैं तो समाज के प्रति हमारे कर्तव्य का जन्म होता है। मान्यता के आधार पर ही कर्तव्य उत्पन्न होता है। तो स्वीकृति के अनुसार कर्तव्य का पालन करना है। हमने अगर परिवार, समाज या राष्ट्र को अपना माना है तो अपने पास जो सामान है उसे उनकी सेवा में समर्पित करना है। ऐसा करने से चित्त शांत और निर्मल हो जायेगा और चित्त के शांत होते ही योग की प्राप्ति हो जायेगी।

इसलिये भगवान ने कहा कर्तव्य का पालन करो– कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। कर्तव्य का पालन कर दो, तुम्हारा काम हो जायेगा। योगस्थः कुरू कर्माणि, चाह रहित होकर कर्म करो। समता में स्थित होकर कर्म करना– समत्व योग उच्यते।

आज हम कुटुंबी जनों से ममता करेंगे, सेवा नहीं करेंगे। ममता तो बांधने वाली है और सेवा आपको मुक्ति देने वाली है। कुटुंब आपको सेवा के लिये मिला है, ममता के लिए नहीं मिला। उल्टा काम करते हैं। सेवा तो करते नहीं ममता करते हैं। जिनके साथ रहते हैं, जो हमारे साथ रहते हैं उनसे ममता रखेंगे पर उनकी सेवा नहीं करेंगे। उल्टे उनसे सुख की आशा रखते हैं। यह ठीक नहीं है। सेवा तो सबकी करनी चाहिए और जब स्वयं सुख की आशा न करें पर सेवा सबकी करें तो यह साधन है। व्यक्तियों और वस्तुओं में सुख की आशा और ममता करना बस यही असाधन है। असाधन कहीं बाहर से नहीं आता, बंधन कहीं बाहर से नहीं आता, हम अपने आप अपने जीवन में असाधन और बंधन को जन्म देते हैं अहमता और ममता करके।

जिनसे मानी हुई एकता है, जातीय एकता

नहीं है उनकी सेवा करने में हिचकते हैं, उनको आदर देने में हिचकते हैं, प्यार देने में हिचकते हैं। उनसे सुख की आशा करने में नहीं हिचकते, उनसे ममता करने में नहीं हिचकते हैं। अगर यह साधन है तो फिर असाधान क्या है? मिले हुए वस्तु और व्यक्तियों से ममता करना उनसे सुख की आशा करना यह अगर कोई साधान माने तो फिर असाधन कोई है ही नहीं। वास्तव में यही असाधन है। इससे ममता करना और इससे सुख की कामना करना इसी को असाधन माना है। हमारे प्रिय प्रभु की वाणि में भी ममता और कामना को ही सबसे बड़ा असाधन माना है और संतवाणी भी इसी और संकेत करती है। इसका अंत करना है बाकी साधान तो अपने आप प्रकट होगा। मोर मुकुट बंसी वाले की जय! गोमाता की जय!

जय गोमाता

(कविता)

हे गोमाता तुम करती हो सारे जग का पोषण,
दुर्बुद्धि दुष्ट मनुष्य ने किया तुम्हारा ही शोषण।
गोमाता हैं परमेश्वर की अनुपम कृति विलक्षण,
आओ हम मिलकर करें गोसंवर्धन गोसंरक्षण।।

गाय के पृष्ठ भाग में ब्रह्मा जी, गले में श्री नारायण,
मुख में शिवजी, रोम-रोम में ऋषि-महर्षि-देवगण।
अष्ट ऐश्वर्यो सहित माता लक्ष्मी गोबर में करें रमण,
वहाँ देवता वास हैं करते, जहाँ गाय के पड़ें चरण।।

सर्वदेवमयी गोमाता ही चलती फिरती देवालय,
साक्षात् प्रेम की प्रतिमूर्ति सबको देतीं वात्सल्य।
अमृत तुल्य दुग्ध दही घी गोबर गोमूत्र-पंचगव्य
से तन मन धन सँवर जाता,जीवन हो जाता धन्य।।

तुम्हारा वत्स हल को खींचे और करे भारवाहन,
गोबर - गोमूत्र से बने खाद कीटनाशक पावन।
गोवंश से जैविक कृषि, रहित हानिकारक रसायन,
गो-आधारित अर्थव्यवस्था रोके ग्राम से पलायन।।

ट्रैक्टर और डीजल वाहनों ने किया बैलों को बेकार,
दूषित खाद्य पदार्थों की पड़ी जन स्वास्थ्य पर मार।
न केवल तन रुग्ण हुए लोगों के मनों में भरे विकार,
भौतिकता की आँधी में उड़ गए सभी शुभ संस्कार।।

पहले गोवंश से पृथक हुए, अब टूटे जा रहे परिवार,
वृद्ध माता-पिता भी बहुतों को अब लगने लगे भार।
प्रदूषित शहरों में रहते नहीं मिलता समुचित रोजगार,
व्यसन छल-कपट अपराध की होती जा रही भरमार।।

गोचर भूमियों पर हुए कब्जे, नहीं किया चारा विकास,
खाद्यान्न सड़ता रहा, नहीं मिटी गोवंश की भूख-प्यास।
रासायनिक कृषि से भूमि का ऊसर बनकर हुआ ह्रास,
गोवंश सड़कों व कत्लखानों में बन रहा काल का ग्रास।।

करो गोबर, गोमूत्र व बैलों की शक्ति का उपयोग,
जैविक कृषि को अपनाओ व गो आधारित कुटीर उद्योग।
पंचगव्य से निर्मित औषधि व उत्पादों का करो प्रयोग,
उत्तम स्वास्थ्य, स्वच्छ पर्यावरण का होगा सुलभ संयोग।।

महँगे निवेशों के बिना उच्चतर गुणवत्ता का उत्पादन
मिलेगा, मनुष्य एवं गोवंश दोनों को पौष्टिक भोजन।
अर्थव्यवस्था सुधरेगी युवा शक्ति का होगा सुनियोजन,
प्रेम शांति सदाचार उच्च विचार करेंगे सार्थक जीवन।।

चिकित्सा अपराध व्यसन निवारण व्यय में होगी बचत,
मनुष्य के बल बुद्धि तेज ओज आनंद की होगी बढ़त।
बाह्य व आंतरिक विकास, दोनों ही हो जायेंगे प्रशस्त,
तब ही तो स्थापित होगा महापुरुषों की दृष्टि का भारत।।

विप्र धेनु सुर संत हित लिया प्रभु श्रीराम ने अवतार,
श्री राम मंदिर निर्माण का स्वप्न भी हो गया साकार।
गोसंवर्धन गोसंरक्षण कार्य का भी हो व्यापक विस्तार,
यही सर्वोत्तम रामकाज है, समझे समाज व सरकार।।

गोसेवा ही परमात्माकी कृपा प्राप्तिका अद्वितीय यंत्र,
श्रीकृष्ण की गोमाता पर नहीं चलेगा कलि का षड्यंत्र।
जागो भारत के ऋषि मुनियों, जागो जनता व राजतंत्र,
भारत की सर्वांगीण समृद्धि का गोरक्षा ही है मूल मंत्र।।

राजीव गुप्ता से.नि. आई.ए.एस. एवं
पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश गोसेवा आयोग

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

संकट गाय पर नहीं, सनातन धर्म पर है

..... पिछले अंक से आगे

.......आपने कुछ समय पहले सुना होगा कुछ प्रांतों के न्यायाधीश, उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की टिप्पणी सुनी होगी कि सब्जी में विष होने से नवप्रसूता माताओं का दूध विषैला बना और उनके शिशु रोगी हुए। इसलिए भैया यह जो अधिक उत्पादन के लोभ में विषैला अन्न उत्पन्न कर रहे हैं, यह लोभ जो किसान के हृदय में प्रकट हुआ है यह लोभ किसान को कसाई बना रहा है। जो किसान अन्नदाता था, ऋषि के समान उसका स्थान था, लोभ ने उस किसान को आज कसाई बना दिया। वह जहरीला अन्न उत्पन्न करके पूरे राष्ट्र को रोगी बना रहा है, सभी को मार रहा है। राष्ट्र को मार रहा है और स्वयं मर रहा है। इतना ही नहीं वह आत्मघात भी कर रहा है। अत्यधिक फर्टिलाइजर और दवाइयाँ का उपयोग करने वाले राज्यों के किसान आत्महत्या कर रहे हैं।

इसलिये आपसे एक ही निवेदन है कि धर्म जिसे कहते हैं, धर्ममय जीवन जीने की बात है वह औरों के लिए नहीं है, स्वयं के लिए है, अपने कल्याण के लिए, अपने उद्धार के लिए है। लोक और परलोक में अगर सुख चाहते हो, सफलता चाहते हो, शांति चाहते हो, प्रसन्नता चाहते हो, निर्भयता चाहते हो तो धर्ममय जीवन जियो, परमात्ममय जीवन जिओ। जिस गऊ ने और उसके वंश ने भारत को सात्विक अन्न और सात्विक जीवन दिया हो पवित्र जल और हवाएं दी वह गाय और उसका वंश इस समय संकट में है। उसका उपयोग एक षड्यंत्र के माध्यम से समाप्त किया जा रहा है, उसे अनुपयोगी बना दिया। खेती के लिए यंत्र ट्रेक्टर आदि आ गये सिंचाई के लिए डीजल, बिजली आ गये, परिवहन के लिए भी साधन आ गए तो बैलों का उपयोग समाप्त हो गया और दूध के लिए तो 17वीं शताब्दी से ही दूसरे जानवर पालने शुरू कर दिए।

सबसे पहले महिषी (भैंस) आई। भैंस का दूध तो भारत में 16वीं शताब्दी से पहले खाने-पीने में काम नहीं लेते थे, परंतु 17वीं शताब्दी से भारतवासी भैंसों का घी दूध खाने लग गए। जैसे ही भैंसों का दूध दही और घी खाने में उपयोग होना शुरू हुआ वैसे ही जलवृष्टि कम होनी शुरू हो गई, पानी कम बरसना शुरू हुआ। भगवान श्रीकृष्ण से लेकर गोस्वामी तुलसीदास जी, भक्तिमती मीरा, नरसी मेहता के काल तक जितना पानी कम नहीं हुआ उतना पानी नरसी मेहता और महात्मा गांधी के बीच के काल में कम हो गया और इतना ही नहीं महात्मा गांधी और नरसी मेहता के बीच में जितना पानी कम नहीं हुआ उतना पानी जवाहरलाल नेहरू और नरेंद्र मोदी के बीच में कम हो गया।

नजर दौड़ा के देखो आप यहाँ धानेरा में नदियाँ बहती थी, डीसा में बहती थी हमें याद है। बनास में पानी चलता था, धानेरा में चलता था। नंदगांव से आने वाला जल सांचौर से आबूरोड जाते हैं तो बड़गांव में सड़क के ऊपर से बहता था। पिछले 30-40 वर्षो में पानी खत्म हुआ। क्या हुआ ऐसा नरसी मेहता और महात्मा गांधी के बीच में? जवाहरलाल नेहरू और नरेंद्र मोदी के बीच में कौन आया? नरसी मेहता और महात्मा गांधी के बीच में भैंस आई और जवाहरलाल नेहरू और नरेंद्र मोदी के बीच में जर्सी आई। यही हमारे देश में अनावृष्टि का

प्रधान कारण है। यह काली है, काल लेकर आई और यह जो पूतना राक्षसी है यह विष लेकर आई। इनका सीमन वेदलक्षणा गोमाता के गर्भ में डाला वह भी संवर्धन के नाम से। भारत की उत्तम नस्ल कांकरेज, गिर, साहीवाल, थारपारकर, राठी, रेड्डी सिंधी इनकी कुछ ऐसी सौम्यवान, समृद्धिवान, शोर्यवान परंपरा जो थी उन्हें यह झूठ फैलाकर विनष्ट कर दी कि भारतीय गाएं दूध कम देती है। गायों की तरफ ध्यान कब दिया कि दूध ज्यादा दे? 70 वर्ष हो गए भारतीय वेदलक्षणा गायों की परंपरा पर ध्यान कब दिया? दिया कभी ध्यान? भारत की वेदलक्षणा गायों की नस्लों पर ध्यान दिया? बतावे कोई माईकालाल कि सरकार ने कुछ किया हो। हाँ समाज ने पहले गाँव में गायों की व्यवस्था की। उसके लक्षण देखकर, उसके बाप के, उसकी माँ के, उसके नानी के लक्षण देखकर फिर उसे नंदी के रूप में गाँव की गायों के संवर्धन के लिये छोड़ा जाता था और 3 वर्ष बाद नंदी बदल दिया जाता था। यह गाँव ही काम करता था, इसमें कोई सरकार नहीं थी। गोचरों की सुरक्षा गाँव करते थे, तालाबों की खुदाई और सुरक्षा गाँव करते थे। सार्वजनिक सम्पत्तियों का विकास और संरक्षण गाँव ही करते थे। जब से सरकार के आश्रित हुए तब से गोचर नष्ट हुए, तालाब नष्ट हुए गाएं नष्ट हो गई।

सज्जनों! जिस गाय ने अनेकों उपकार किए उस गाय का उपयोग समाप्त करने पर आज गाय इतनी तिरकृत हो गई, इतनी अपमानित हो गई, इतनी उपेक्षित हो गई कि भेड़ बकरी और गधा भी आपको बिना मालिक का नहीं मिलेगा, पर गाय सब जगह सूनी, निराश्रित घूम रही है। गोमाता के बिना घर कैसा? माँ के बिना घर नहीं होता। परन्तु जब आवारा कपूत पैदा होता है तो माँ को निराश्रित कर देता है। गाएं आवारा नहीं है, आज का मनुष्य आवारा है इसलिये गाएं निराश्रित हो गई, घर विहीन हो गई, उसका वंश निराश्रित हो गया।

यह एक अवसर है हम लागों के लिये, पूण्य अर्जन करने का, धर्ममय जीवन जीने का। अगर हम 30-40 वर्ष पहले पैदा होते, 50 वर्ष पहले इस अवस्था में होते तो हमें गाय सेवा करने को नहीं मिलती। गाय छोड़ते ही नहीं थे, न बछड़ियों छोड़ते, न बछड़ा छोड़ते और न बूढ़ा बैल छोड़ते। बछड़ा-बछड़ियों तो आवश्यकता के लिये रखते थे और बूढ़े गोवंश का उपकार हे इसलिये उसकी सेवा करते थे। आवश्यकता और आशीर्वाद को ध्यान में रखना चाहिये। आज यह स्थिति ऐसी है तो हमें इनकी सेवा करके आशीर्वाद लेना चाहिये। जो संकट गाय पर आया है वो वास्तव में गाय पर नहीं धर्म पर आया है। गाय धर्म की जननी है। गाय के बिना सत्य अहिंसा, दया, दान, मनुष्य में हो ही नहीं सकते। गाय के बिना जब सात्विकता ही नहीं होगी तो मनुष्य का अंत:करण शुद्ध कैसे होगा? इसलिये गाय के ऊपर संकट माने धर्म के ऊपर संकट, धर्म पर संकट माने धरती पर संकट है और धरती पर संकट माने तो मात्र देहधारी प्राणी पर संकट है।

इन सभी को अगर संकट से बवाना है तो हम हमारी गोमाता को पुन: उसी महिमा में पुन:स्थापित करें जिस महिमा के प्रभाव से हमारे पूर्वज हजारों वर्षो से गो की उपासना, आराधना, पालन और संरक्षण करते आये हैं। उसी के लिये ही श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की स्थापना हुई है। गाँव-गाँव हमारे प्रवास का यही उद्देश्य है। गाँवों को गोचर बचाने की प्रेरणा मिले। आप देखेंगे, गोचर की रक्षा प्रकृति की रक्षा के लिये है। अभी आपने देखा, पिछे जालें आई थी इन जालों के नीचे अनेकों प्रकार के पशु-पक्षी, कीट-पतंगे, जीव-जन्तु आश्रय पाते हैं। आप देखेंगे वहाँ नीलगाय भी है, हिरण भी है, लोमड़ी भी है, खरगोश भी है, मोर भी है, चिड़ियाएं भी हैं, सारे प्रकार के पक्षी है। छोटे-छोटे असंख्य प्रकार के कीट और पतंग भी उस गोचर भूमि में

भोजन पाते हैं और आश्रय पाते हैं। गोचर का मतलब क्या है? गोचर मूक सृष्टि का बहुत बड़ा सदाव्रत है। चींटी से लेकर हाथी तक सबको गोचर में आश्रय और आहार मिलता है।

सज्जनों! आप सभी से अपेक्षा है कि आप आपने गाँव में बचे हुए गोचर की सुरक्षा करें, उसे विकसित करें, उनमें वृक्ष लगावें, घास लगावें, गोचर गायों के लिये काम आवे। गायों के लिये तो गोचर है ही है, वो सबके भी काम आवे। गोचर सुरक्षित रहेगा तभी काम आयेगा। गोचर के संरक्षण से पर्यावरण का संरक्षण होगा। वो गोचर आपको जीवन शक्ति देगा, प्राणवायु ऑक्सीजन देगा। आने वाली पीढ़ियों को प्राण देगा। आप कहोगे- हमको क्या मिलेगा? गोचर से आपको सब कुछ मिलेगा।

आपने अपनी कृषि भूमि को अभी तक यूरिया-फर्टिलाइजर रूपी विष दिया है उसको विषमुक्त करें, जहर मुक्त करें। गो आधारित जैविक खेती अपनावें। गाय के गोबर से विधिवत ऐसा सुन्दर खाद बनावें कि अपनी भूमि को सम्पूर्ण पौषण मिले। एक गाय एक एकड़ खेत को खाद प्रदान कर सकती है। गाय के गोबर में ऐसी उर्वरा शक्ति है कि दुनिया की कोई अनुसंधानशाला 100 ग्राम के बराबर भी गोबर जैसा कोई पदार्थ तैयार नहीं कर सकती चाहे करोड़ों रुपये खर्च कर दे, चाहे कैसे भी वैज्ञानिक लगा दे। ऐसा है गाय का गोबर, धरती का आहार है, अमृत के समान है।

हमारी गाएं जो दूध विहीन हो गई हैं उन्हें ऐसे निरारित छोड़ो मत, गलती हमसे हुई है। अपनी गलती को सुधारो। बिना दूध की इसलिये हुई है कि बिना नस्ल के नंदियों के साथ की गई। कमजोर गायों को नंदियों के साथ की गई, बछड़े-बछड़ियों को दूध नहीं पिलाया गया, गायों को बाल आयु में पौषण नहीं मिला और ब्याने के बाद सही खुराक नहीं दी गई। अव्यवस्था के कारण, कुपोषण के कारण उपेक्षा के कारण गायों का दूध गिरा तो उसमें गायों का क्या दोष, सारा दोष तो हमारा है। आप में से बहुत से लोग जानते हैं कि ये ही हमारी गाएं आज से 30-40 साल पहले दो-दो बाल्टी दूध, 8-8, 10-10 लीटर दूध देती थी, आज भी कइयों के घरों में होगी और अब भी आपके द्वारा छोड़ी हुई गायों में से श्री गोधाम पथमेड़ा में सैंकड़ों गाएं हैं जो 12 से 20 लीटर तक एक दिन में दूध देती है। ये वे ही गाएं हैं जिन्हें छोड़ दिया गया था। इसका मतलब यह है कि गायों को वापस दूधवाली बनाया जा सकता है, अगर भूल हुई है उसका सुधार करें तो।

सुधार कैसे होगा? अतीत में 200 गाएं ब्याती तो 100 बछड़े जन्मते थे और 100 बछड़ियों होती थी। 100 बछड़ों में 98 तो बैल होते और केवल 2 नंदी होते थे। 2 से 4 प्रतिशत नर सांड बनाने योग्य होते थे, बाकी बैल बनाते जो खेती के लिये काम आते थे। अब खेती के लिये काम आने वाले नर तो गायों के साथ खड़े हैं यह ठीक नहीं है। यह जो गोशाला है यह नंदीशाला होनी चाहिये। नर गोवंश गोशाला में रहे और गाएं घरों में रहे, कोई बूढ़ी है तो रखो गोशाला में, लेकिन दूध पीना बंद करते ही बछड़ों को सूना नहीं छोड़ें, उन्हें गोशाला में जमा करा दें और अच्छे बछड़े जिनकी माँ एक दिन का 16 से 22 लीटर तक दूध देती हो उनको सांड के रूप में तैयार किये जाय व उन्हीं से गायों का संवर्धन हो। हमें 10 वर्ष ध्यान रखना होगा कि हमारी गायों के बछड़े हैं वो जब तक उनकी माँ का दूध 15 लीटर से ऊपर न हो जाए तब वे बछड़े गाय के साथ न जाए तो 10 वें वर्ष पूरे गाँव की गाएं 15 से 20 लीटर दूध देने वाली हो जायेगी। उनके बछड़े-बछड़ियों फिर लाखों रुपये मूल्य के होंगे। जिस प्रकार पाडी और घोड़ी को सूनी नहीं छोड़ते ऐसे ही फिर गाय को भी कोई सूनी नहीं छोड़ेंगे, यह सब आपके हाथों में है। भारत की सरकारें यह काम नहीं करेगी....शेष अगले अंक में

रामायण में गोमहिमा

(संकलित)

यहाँ वाल्मीकि रामायण में वर्णित गोमहिमा (गोमाता की महिमा) पर श्लोकों सहित एक विस्तृत, शोधपरक और सुंदर लेख प्रस्तुत है।

वाल्मीकि रामायण में गोमहिमा
(सनातन संस्कृति, अर्थतंत्र और धर्म का मूल आधारः गोवंश)

सनातन धर्म में गाय को केवल एक प्राणी नहीं, बल्कि साक्षात् जगतजननी, देवस्वरूपा और संपूर्ण सृष्टि का पोषण करने वाली माता माना गया है। महर्षि वाल्मीकि रचित आदि काव्य वाल्मीकि रामायण केवल मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की पावन गाथा ही नहीं है, बल्कि वह भारतीय जीवन मूल्यों, राजनीति और अर्थशास्त्र का अनुपम ग्रंथ है। इस महाकाव्य के सूक्ष्म अध्ययन से यह अकाट्य सिद्ध होता है कि रामायण काल की पूरी सभ्यता, सुख-समृद्धि, धार्मिक अनुष्ठान और शासन व्यवस्था गो-केंद्रित थी।

1. राष्ट्र की समृद्धि का पैमानाः गो-धन-

रामायण काल में किसी राजा या राष्ट्र के वैभव की गणना सोने-चांदी से नहीं, बल्कि उसके पास उपलब्ध गोवंश की संख्या से होती थी। रामायण के बालकाण्ड में कोशल देश और अयोध्या नगरी की संपन्नता का वर्णन करते हुए महर्षि वाल्मीकि लिखते हैं:

गामश्वं प्रचुरं धान्यं धनं च सततम् शुचि।
तुष्टाः पुष्टाश्च मनुजाः भयलोभ विवर्जिताः

(बालकाण्ड, 6.7)

अर्थः अयोध्या में गायें, घोड़े और पवित्र धान्य प्रचुर मात्रा में थे। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि धन की सूची में गाम (गायों) को सबसे पहला स्थान दिया गया है। जिस राष्ट्र में गोधन प्रचुर होता है, वहाँ के मनुष्य शारीरिक रूप से पुष्ट (स्वस्थ) और मानसिक रूप से तुष्ट (संतुष्ट) रहते हैं।

जब प्रभु श्रीराम वनवास के लिए प्रस्थान करते हैं, तब वे अपनी प्रिय जन्मभूमि को नमन करते हुए कौशल देश की मुख्य पहचान इस प्रकार बताते हैं:

गावो बहुला यस्मिन् धनधान्यवतो वरः।

(अयोध्याकाण्ड)

अर्थात् मेरा कौशल देश वह श्रेष्ठ भूमि है जहाँ सर्वत्र गायों की बहुलता है और जो गोधन के कारण ही धन-धान्य से संपन्न है।

2. रामराज्य और गो-आधारित कृषिः

अयोध्याकाण्ड के 100 वें सर्ग में, जब भगवान राम चित्रकूट में भाई भरत से मिलते हैं, तो वे राज्य के कुशल-क्षेम के अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न कृषि और गोरक्षा के विषय में पूछते हैं:

कच्चित्ते दयिताः सर्वे कृषिगोरक्षजीविनः।
वार्तायां संश्रितस्तात लोको हि सुखमेधते।।

(अयोध्याकाण्ड, 100.47)

अर्थः हे प्रिय भरत! क्या तुम्हारी प्रजा में गायों की रक्षा करने वाले (गोरक्ष) और गो-आधारित कृषि (खेती) से आजीविका चलाने वाले लोग सुखी हैं? क्योंकि कृषि और गोरक्षा (वार्ता) के आश्रित रहने वाला समाज ही वास्तव में सुख और वास्तविक समृद्धि को प्राप्त करता है।

इस श्लोक में रामराज्य की आर्थिक नीति का मूल मंत्र छिपा है। उस काल में कृषि पूरी तरह गाय पर आश्रित थी। गाय से प्राप्त ऋषभ (बैल) हल चलाने के काम आते थे, और गोमय (गोबर) तथा गोमूत्र भूमि को उर्वरा शक्ति प्रदान करते थे। श्री राम के अनुसार, यदि देश का गोवंश सुरक्षित है, तो देश का अर्थतंत्र कभी विफल नहीं हो सकता।

3. सर्व-संपदा प्रदायिनी:

महर्षि वशिष्ठ की नन्दिनी- वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड (सर्ग 52-54) में राजर्षि विश्वामित्र और ब्रह्मर्षि वशिष्ठ का सुप्रसिद्ध संवाद आता है। वशिष्ठ जी के पास कामधेनु की पुत्री नन्दिनी (शबला) गाय थी। जब राजा विश्वामित्र अपनी विशाल सेना के साथ आश्रम आए, तो नन्दिनी ने क्षण भर में पूरी सेना के लिए छप्पन भोग और अस्त्र-शस्त्र प्रकट कर दिए। नन्दिनी के इस दिव्य सामर्थ्य को देखकर विश्वामित्र ने वशिष्ठ जी से कहा कि यह गाय मुझे दे दो, इसके बदले मैं तुम्हें एक लाख गायें या अपना पूरा राज्य देने को तैयार हूँ:

गवां शतसहस्रेण दीयतां शबला मम।
राज्यं वा दीयतां सर्वं शबला सम्प्रदीयताम्।।

(बालकाण्ड, 53.9)

तब महर्षि वशिष्ठ ने जो उत्तर दिया, वह सनातन संस्ति में गाय के आध्यात्मिक और व्यावहारिक मूल्य को स्थापित करता है:

एवमेषा मम प्राणाः सर्वस्वं च ममानघे।
स्वाहाकारवषट्कारौ स्वधाकारस्तथैव च।।

(बालकाण्ड, 53.14)

अर्थ: वशिष्ठ जी ने कहा हे राजन्! यह गोमाता ही मेरे प्राण हैं, यही मेरा सर्वस्व हैं। देव-यज्ञ (स्वाहा), ऋषि-यज्ञ (वषट्कार) और पितृ-यज्ञ (स्वधा) सब इसी गाय के घृत और दुग्ध पर टिके हैं। मैं ब्रह्मांड के किसी वैभव के लिए अपनी माता का परित्याग नहीं कर सकता।

यह प्रसंग सिद्ध करता है कि गाय केवल दूध देने वाला प्राणी नहीं, बल्कि पर्यावरण, यज्ञ-चक्र और संपूर्ण देव-शक्तियों को पुष्ट करने वाली ऊर्जा का केंद्र है।

4. शुभ कार्यो में अग्रगण्य और गो-दान की महिमा

रामायण में किसी भी मांगलिक कार्य, उत्सव या संकट निवारण के समय गो-दान और गो-पूजन को अनिवार्य माना गया है।

श्री राम के जन्म पर गो-दान: बालकाण्ड में जब प्रभु राम का जन्म होता है, तब राजा दशरथ आनंदित होकर ब्राह्मणों और सूतों को लाखों गऊओं का दान करते हैं, ताकि नवजात शिशुओं को दीर्घायु और आरोग्य प्राप्त हो।

त्रिजट ब्राह्मण का प्रसंग: अयोध्याकाण्ड के 32वें सर्ग में एक बहुत ही सुंदर प्रसंग आता है। जब श्री राम वन जाने से पूर्व अपनी संपत्ति का दान कर रहे होते हैं, तब त्रिजट नाम के एक निर्धन लेकिन परम तपस्वी ऋषि उनके पास आते हैं। वे गायों के सहयोग से स्वयं खेती करके जीविका चलाना चाहते हैं। श्री राम परिहास में उनसे कहते हैं कि आप जितनी दूर तक अपनी लाठी फेंक सकेंगे, वहाँ तक की सभी गायें आपकी हो जाएंगी। त्रिजट ऋषि पूरी शक्ति से लाठी फेंकते हैं, जो सरयू नदी के पार जाकर गिरती है। तब श्री राम सहर्ष उन्हें हजारों गायें और बैल दान में देते हैं। जो यह दर्शाता है कि उस काल में संन्यासियों और ऋषियों की जीविका का आधार भी गोवंश ही था।

उपसंहार (निष्कर्ष): वाल्मीकि रामायण का पन्ना-पन्ना इस बात का साक्षी है कि आदि काव्य में गोमहिमा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। चाहे राजा जनक का बैल चालित हल से पृथ्वी जोतना हो (जिससे माता सीता प्रकट हुई), या महर्षि वशिष्ठ का गोरक्षा के लिए तपोबल का प्रयोग करना हो। *रामायण सिद्ध करती है कि भारत का आध्यात्मिक उत्कर्ष और भौतिक वैभव हमेशा गौ और ऋषि के संरक्षण में ही फला-फूला है। भगवान श्री राम के आदर्शो पर आधारित रामराज्य की परिकल्पना तब तक अधूरी है, जब तक हम वाल्मीकि रामायण के संदेश को अपनाकर* ***कृषि-गोरक्ष-जीविनः*** *की भावना से गोवंश का संवर्धन और गो-आधारित प्राकृतिक जीवन शैली को पुनः अपने जीवन में स्थान नहीं देते।*

जय गोमाता ! जय श्रीराम !

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

..........पिछले अंक से आगे

......मान्यता अनुसार भगवान दत्तात्रेय ने परशुराम जी को श्रीविद्या-मंत्र प्रदान की थी। यह मान्यता है कि शिवपुत्र कार्तिकेय को भगवान दत्तात्रेय ने अनेक विद्याएं दी थी। भक्त प्रहलाद को अनासक्ति-योग का उपदेश देकर उन्हें श्रेष्ठ राजा बनाने का श्रेय भगवान दत्तात्रेय को ही जाता है। दूसरी ओर मुनि सांकृति को अवधूत मार्ग, कार्तवीर्यार्जुन को तंत्र विद्या एवं नागार्जुन को रसायन विद्या इनकी कृपा से ही प्राप्त हुई थी। गुरु गोरखनाथ को आसन, प्राणायाम, मुद्रा और समाधि-चतुरंग योग का मार्ग भगवान दत्तात्रेय की भक्ति से प्राप्त हुआ। इनकी पूजा मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन की जाती है, और ये मुख्य रूप से गिरनार (गुजरात) और गाणगापुर (कर्नाटक) में पूजे जाते हैं।

स्मर्तृगामी सनोऽवतु अर्थात् वे (गुरु दत्तात्रेय), जो स्मरण करने मात्र से उपस्थित हो जाते हैं। भगवान दत्तात्रेय के बारे में कहा जाता है कि वे **स्मरणमात्रसंतुष्ट** हैं। अन्य देवताओं की तुलना में उन्हें प्रसन्न करने के लिए लंबी तपस्या की आवश्यकता नहीं होती; भक्त की सच्ची पुकार ही उनके आगमन के लिए पर्याप्त है। वे एक अवधूत और अमर गुरु माने जाते हैं। मान्यता है कि वे आज भी सूक्ष्म रूप में विचरण करते हैं और जहाँ भी उनका श्रद्धापूर्वक स्मरण होता है, वहाँ उनकी अदृश्य शक्ति या उपस्थिति तुरंत अनुभव की जा सकती है। शास्त्रों के अनुसार, केवल स्मरण मात्र से ही भूत, प्रेत, बाधाएं और मानसिक कष्ट दूर भाग जाते हैं।

भगवान दत्तात्रेय गोप्रेमी हैं। उनके चित्र के साथ जो गोमाता खड़ी है वो कामधेनु गोमाता है। वे प्रतिदिन अनसूया माता की गाएं चराया करते थे।

भूतप्रेतपिशाच्चाद्या यस्य स्मरणमात्रतः।
दूरादेव पलायंते दत्तात्रेयं नमामि तम्।।

ऐसे परम आराध्य भगवान दत्तात्रेय की श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा में नित्य पावन उपस्थिति रहती है।

सदियों से यह माना जाता है कि माता अनसूया मंदिर में श्रद्धापूर्वक पूजा और रात्रिभर जागरण करने वाले निःसंतान दंपत्तियों को संतान की प्राप्ति होती है। आज भी यह मान्यता है। प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष माह में दत्तात्रेय जयंती पर भव्य नौदी मेला लगता है जहाँ श्रद्धालु पूरी रात हाथ में दीपक लेकर भजन-कीर्तन करते हैं।

माता अनसूया मंदिर से लगभग 2 किलोमीटर की आगे की चढ़ाई पर अत्रि मुनि आश्रम स्थित हैं। यह वही स्थान है जहाँ महर्षि अत्रि ने कठिन तपस्या की थी। यह स्थान शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर है। यहाँ महर्षि अत्रि मुनि (सती अनसूया के पति) की अनोखी व प्राकृतिक गुफा है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ नदी गुफा के ऊपर से बहती है और नीचे गुफा के अंदर ऋषि अत्रि की शिला रूपी मूर्ति स्थापित है। गुफा के भीतर का वातावरण बहुत ही शांत है। भक्त यहाँ बैठकर ध्यान लगाते हैं और उनको अलौकिक अनुभव होते हैं।

यहाँ एक अमृत गंगा जलप्रपात का सुन्दर दृश्य है। ऐसी मान्यता है कि जब तक भक्त इस नदी की परिक्रमा नहीं करते इस तीर्थ के दर्शन का फल नहीं मिलता है। यह नदी बहुत ऊँचाई से गिरती है और बहुत ही सुन्दर दृश्य बनता है। कहा जाता है कि माता अनसूया ने अपने तपोबल से अमृत गंगा को प्रकट किया था।

माता अनसूया मंदिर के समीप एक विशाल शिला (चट्टान) पर भगवान महागणेश की भव्य मूर्ति बनी हुई है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, यह मूर्ति प्राकृतिक रूप से स्वयंभू (स्वयं प्रकट) है, इसे किसी कलाकार ने नहीं तराशा है। इस प्रतिमा की

एक खास विशेषता यह है कि गणेशजी यहाँ आराम की मुद्रा में दायीं ओर झुककर बैठे हुए दिखाई देते हैं। उनकी यह बैठी हुई मुद्रा भक्तों के बीच विशेष आकर्षण का केंद्र है। यह प्रतिमा मंदिर के मुख्य द्वार या परिसर के ठीक पास स्थित है। जब यात्री पैदल चढ़ाई पूरी कर मंदिर पहुँचते हैं, तो सबसे पहले गणेश जी की इसी मूर्ति के दर्शन होते हैं। मान्यता है कि मंडल से अनसूया मंदिर की दुर्गम चढ़ाई को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद गणेश जी के दर्शन से सारी थकान दूर हो जाती है और यात्रा निर्विघ्न संपन्न होती है।

अनसूयाजी से 33 माह की साधना पूरी कर महाराजजी अब वहाँ से प्रस्थान कर दिए एवं नीचे मण्डला आए। मण्डला से बाजपेयजी द्वारा गोपेश्वर तक बस प्रवास का प्रबंध किया गया। गोपेश्वर में श्री राजकुमार जी जालान मिले, उनके साथ ऋषिकेश गीता भवन आए।

(गीता भवन, स्वर्गाश्रम ऋषिकेश)

गीता भवन स्वर्गाश्रम ऋषिकेश का संक्षिप्त इतिहास :- सेठजी श्री जयदयाल जी गोयन्दकाजी सन् 1907-08 में जब मात्र 22 वर्ष के थे तब उन्हें भगवान विष्णु ने चतुर्भुज रूप में दर्शन दिये और वर मांगने हेतु कहा तब सेठजी ने कहा कि मुझे कुछ नहीं चाहिये। तब प्रभु ने कहा कि मेरा दर्शन अमोघ है, जो चाहो सो मिलेगा, कुछ मांगना पड़ता है। तब सेठजी ने कहा कि मेरे पास जो आपका दिया धन है इसका क्या सदुपयोग किया जाय। प्रभु ने कहा कि इसको आप गीता के प्रचार-प्रसार में लगाओ। इसी आज्ञा की पालना में गीताप्रेस गोरखपुर की स्थापना की गई। गीताजी के प्रचार के साथ ही साथ सेठजी साधकों को भगवत्प्राप्ति करवाने हेतु सत्संग किया करते थे। उन्हें एक शांतिप्रिय स्थल की आवश्यकता महसूस हुई जहाँ कोलाहल न हो, पवित्र भूमि हो, साधन-भजन के लिये अति आवश्यक सामग्री उपलब्ध हो। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये उत्तराखंड की पवित्र भूमि पर सन् 1918 के आसपास सत्संग करने हेतु सेठजी पधारे। वहाँ गंगापार भगवती गंगा के तट पर वटवृक्ष और वर्तमान गीता भवन का स्थान सेठजी को परम शान्तिदायक लगा। सुना जाता है कि वटवृक्ष वाले स्थान पर स्वामी रामतीर्थ जी ने भी तपस्या की थी। फिर क्या था सन् 1925 के लगभग से सेठजी अपने सत्संगियों के साथ प्रत्येक वर्ष ग्रीष्म-ऋतु में 3 माह वहाँ रहने लगे। प्रात: 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक भोजन, संध्या वंदन आदि के समय को छोड़कर सभी समय लोगों के साथ भगवत् चर्चा, भजन-कीर्तन आदि चलता रहता था। यह स्थान घने जंगलों से

घिरा हुआ था जहाँ साधकों को जंगली जानवरों का भय रहता था। धीरे-धीरे सत्संगी भाइयों के रहने के लिए पक्के मकान बनने लगे। 1936 में गीता भवन की नींव रखी गई और 1950 के आसपास यह भवन वर्तमान स्वरूप में बनकर तैयार हुआ।

भगवत कृपा से आज वहाँ कई सुव्यवस्थित एवं भव्य भवन बनकर तैयार हो गये हैं जिनमें 1,000 से अधिक कमरे हैं और सत्संग, भजन-कीर्तन आवास के स्थान अलग-अलग हैं। जो शुरू से ही सत्संगियों के लिये निःशुल्क रहे हैं। इस भवन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके कमरों पर सम्पूर्ण गीताजी के श्लोक और पूरी रामचरितमानस की चोपाइयों, दोहे आदि लिखे हुए है। यहाँ आकर लोग गंगाजी के सुरम्य वातावरण में बैठकर भगवत-चिन्तन तथा सत्संग करते हैं। यह वह भूमि है जहाँ प्रत्येक वर्ष न जाने कितने भाई-बहन सेठजी के सानिध्य में रहकर जीवन्मुक्त हो गये हैं। यहाँ आते ही जो आनंदानुभूति होती है वह अकथनीय है। यहाँ आने वालों को कोई असुविधा नहीं होती है। क्योंकि निःशुल्क आवास और उचित मूल्य पर भोजन एवं राशन, बर्तन इत्यादि आवश्यक सामग्री उपलब्ध है।

सेठजी ने अपने जीवन पर्यन्त यहाँ सत्संग किया और श्रद्धेय सेठजी के बाद भाईजी श्री हनुमानप्रसाद जी पौद्दार और उनके बाद श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज ने सत्संग से सनातन धर्मावलम्बियों को लाभान्वित किया। हजारों लाखों साधकों ने यहाँ के सत्संग से अपने जीवन को धन्य किया है। ऐसा लग रहा है कि ईश्वर ने स्वयं ने अपने भक्तों को प्रेम प्रदान करने के लिये इस केन्द्र की स्थापना करवाई थी। ऐसा कहा जा सकता है कि इस स्थान से सबसे अधिक सच्चे साधक तैयार हुए है।

ऐसे विरले आघ्यात्मिक केन्द्र ने महाराजजी को भी आकर्षित किया। अनसूयाजी से ऋषिकेश पहुँचकर महाराज जी सीधे गीता भवन पधारे। यहाँ गीता भवन संख्या 1 में चिरंजीलालजी अग्रवाल प्रबंधक से भेट हो गई। महाराज जी का युवा शरीर हड्डियों का ढ़ांचा मात्र बचा था। अत्यंत कृष शरीर में युवक साधु के शरीर पर एक बड़ा काला तिल का निशान जो पूर्व में चिरंजीलालजी द्वारा देखा हुआ था। जब महाराज जी की आयु 9 वर्ष की थी तब नानाजी गीता भवन लेकर पधारे थे और यज्ञोपवीत संस्कार करवाया था। वो घटना चिरंजीलाल जी को याद थी। उस काले तिल को देखकर और महाराजजी से पूछताछ करने पर उनको ज्ञात हो गया कि ये श्री मगारामजी राजगुरु के दोहिते हैं जिनको गत कई वर्षो से ढूँढा जा रहा था। चिरंजीलाल जी ने महाराज श्री को निवेदन किया कि हम आपको पहचान गए हैं। महाराजजी कुछ बोले नहीं मगर मौन सहमति दे दी कि आपने सही पहचाने हैं।

चिरंजीलालजी ने कमरा खोला और अपने हाथ से कंबल का आसन लगाकर बोले अब आप विश्राम कीजिए तथा आगे अब गीता भवन में गंगा तट पर भजन साधन करिए। महाराज जी ने कहा कि हमको स्वामीजी से मिलना है। इस पर प्रबंधकजी ने कहा कि श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज का चातुर्मास अजमेर के दौलतबाग में हो रहा है, आप अभी यहाँ ठहर जाइये बाद में अजमेर तक जाने की व्यवस्था करवा देंगे। महाराजश्री ने सायंकालीन संध्या वन्दन उपरांत गोदुग्ध ग्रहण करके रात को विश्राम किया। दूसरे दिन चिरंजीलाल जी ने महाराज जी के लिये अजमेर तक जाने का प्रबंध कर दिया।

महाराज जी जब अजमेर पहुँचे तब स्वामीजी का राजस्थान के अकाल पीड़ित गोवंश के संबंध में ही प्रवचन चल रहा था। स्वामीजी बता रहे थे कि इस वर्ष राजस्थान में भयंकर अकाल पड़ गया है इससे यहाँ का गोवंश अत्यंत पीड़ित हो रहा है। कुछ धर्मात्माओं द्वारा अकाल पीड़ित गोवंश को बचाने का प्रयास किया जा रहा है।...लगातार पढ़ते रहिये

तू ही तू

(परम् श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज)

सब कुछ भगवान ही हैं- इसका अनुभव करने के तीन चरण हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं:-

1. सब कुछ भगवान का ही है।
2. सब कुछ भगवान ही हैं।
3. भगवान के सिवाय कभी कुछ हुआ ही नहीं।

देखने-सुनने में जो कुछ आता है, वह सब मिलने और बिछुड़ने वाला है। जो मिला है, वह बिछुड़ जायगा- इसमें किंचिन्मात्र भी सन्देह नहीं है। अनन्त ब्रह्माण्डों में तिल-जितनी कोई वस्तु भी हमारी नहीं है। जो कुछ देखने-सुनने में आता है, वह सब अपरा प्रकृति है, जो भगवानकी है। भगवान ने अपरा प्रकृति को भी 'मेरी प्रकृति' कहा है-'अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा' (गीता 7/4) और परा प्रकृति को भी 'मेरी प्रकृति' कहा है-'प्रकृतिं विद्धि मे पराम्' (गीता 7/5)। फिर हमारी क्या वस्तु हुई? सब कुछ भगवान का ही हुआ! अतः जो कुछ दीखता है, वह हमारा नहीं है, प्रत्युत भगवान का है-यह दृढ़ता से स्वीकार कर लें तो हमारा साधन शुरू हो जायेगा। जब तक हम मिले हुए को अपना मानते रहेंगे, तब तक साधन शुरू नहीं होगा। मिले हुए को अपना मानते रहने से न तो विवेक दृढ़ होता है और न विश्वास ही दृढ़ होता है। इसलिये सन्तों ने, भक्तों ने कभी संसार को अपना नहीं माना, प्रत्युत केवल भगवान को ही अपना माना-'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई'। 'मैं' भी हमारा नहीं है, प्रत्युत भगवान का ही है। शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, प्राण आदि सब भगवान के ही हैं।

मेरा कुछ नहीं है, सब कुछ भगवान का ही है-इस सत्य की स्वीकृति होते ही 'सब कुछ भगवान ही हैं'-यह सत्य प्रकट हो जायगा। कारण कि यह जगत केवल जीव की कल्पना है। जगत न तो महात्मा की सृष्टि में है और न परमात्मा की सृष्टि में हैं, प्रत्युत जीवात्मा की सष्टि में है। महात्मा की सृष्टि में सब कुछ भगवान ही हैं.'वासुदेवः सर्वम' (गीता 7/19)। भगवान की सृष्टि में सत्-असत् सब कुछ वे ही हैं.'सदसच्चाहमर्जुन' (गीता 9/19)। परन्तु जीव ने अपने राग-द्वेष के कारण जगत को अपनी बुद्धि में धारण कर रखा है.'ययेदं धार्यते जगत' (गीता 7/5)।

वास्तव में जगत का नामोनिशान भी नहीं है। सम्पूर्ण देश, काल, वस्तु, व्यक्ति, अवस्था, घटना, परिस्थिति आदि में केवल भगवान-ही-भगवान परिपूर्ण हैं। अगर यह बात हमारी समझ में नहीं आती तो हमारी समझ में कमी है, तत्त्व में कमी नहीं है। भले ही हमारी समझ में न आये, पर सच्ची बात सच्ची ही रहेगी, झूठी कैसे हो जायगी? साधक कुछ भी करे, अन्त में उसे सच्ची बातको स्वीकार करना ही पड़ेगा।

'वासुदेवः सर्वम्' का अनुभव होनेके बाद फिर 'सर्वम्' भी नहीं रहता, प्रत्युत केवल 'वासुदेवः' रह जाता है। इसी को श्रीमद्भागवत में 'आत्यन्तिक प्रलय' कहा गया है (12/4/23-24) और इसी को गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज ने 'परम विश्राम' कहा है-'पायो परम बिश्रामु' (मानस, उत्तर. 130/3)।

जैसे, जब तक गेहूँ की खेती रहती है, तब तक पत्ती-डंठल दीखते हैं। अन्त में पत्ती-डंठल नहीं रहते, केवल गेहूँ रह जाता है। तात्पर्य यह हुआ कि केवल वासुदेव-ही-वासुदेव विद्यमान है। अन्य कुछ है ही नहीं, कभी हुआ ही नहीं, कभी होगा ही नहीं, कभी हो सकता ही नहीं। इससे सिद्ध हुआ कि एक परमात्मा के सिवाय कोई चीज कभी पैदा हुई ही नहीं! इस स्थिति का वर्णन नहीं हो सकता; क्योंकि वर्णन करने वाला कोई (व्यक्ति) रहता ही नहीं! भगवान कहते हैं (श्रीमद्भा० 11/19/18) -

सर्वं ब्रह्मात्मकं तस्य विद्ययाऽऽत्ममनीषया ।
परिपश्यन्नुपरमेत् सर्वतो मुक्तसंशयः ।।

'जब सबमें परमात्मबुद्धि की जाती है, तब सब कुछ परमात्मा ही हैं-ऐसा दीखने लगता है। फिर इस परमात्म सृष्टिसे भी उपराम होने पर सम्पूर्ण संशय स्वत: निवृत्त हो जाते हैं।'

'उपरमेत' पद का तात्पर्य है कि साधक 'सब कुछ भगवान ही हैं'.इस वृत्ति से भी उपराम हो जाता है, इस वृत्ति को भी छोड़ देता है; क्योंकि उसकी सष्टि में 'सब कुछ' रहता ही नहीं। इसलिये वृत्ति छूटने पर एक भगवान ही रह जाते हैं। तात्पर्य है कि भक्त सर्वत्र परिपूर्ण भगवान के शरणागत होकर अपने- आपको भी भगवान में ही लीन कर देता है। फिर शरणागत नहीं रहता, केवल शरण्य रह जाते हैं। 'मैं' नहीं रहता, केवल भगवान रह जाते हैं। यही असली शरणागति है। ऐसी शरणागति के बाद फिर परमप्रेम की प्राप्ति होती है-'मद्भक्तिं लभते पराम्' (गीता 18/54)। भगवान अपनी इच्छा से प्रेमलीला के लिये एक से दो हो जाते हैं-

द्वैतं मोहाय बोधात्प्राग्जाते बोधे मनीषया।
भक्त्यर्थं कल्पितं (स्वीकृतं) द्वैतमद्वैतादपि सुन्दरम्
(बोधसार, भक्ति० 42)

'तत्त्वबोध से पहले का द्वैत तो मोह में डालता है, पर बोध हो जाने पर भक्ति के लिये स्वीकृत द्वैत अद्वैत से भी अधिक सुन्दर होता है।'

भगवान की इच्छा से होने वाला यह प्रेम प्रतिक्षण वर्धमान होता है। इसलिये कभी भक्त और भगवान एक हो जाते हैं और कभी दो हो जाते हैं। प्रेम में यह मिलना और अलग होना (मिलन और विरह) भगवान की इच्छा से ही होता है, भक्त की इच्छा से नहीं। इस प्रेम की माँग मुक्त महापुरुषों में भी देखी जाती है। कारण कि योग और बोध की प्राप्ति होने पर तो सूक्ष्म अहम् रहता है (यह सूक्ष्म अहम् जन्म-मरण देने वाला तो नहीं होता, पर मतभेद पैदा करने वाला होता है। इस सूक्ष्म अहम् के कारण ही आचार्यो में तथा उनके दर्शनों में मतभेद रहता है) पर प्रेम की प्राप्ति होने पर इस सूक्ष्म अहम् का भी सर्वथा अभाव हो जाता है। तभी कहा है-

प्रेम भगति जल बिनु रघुराई। अभिअंतर मल कबहुँ न जाई। (मानस, उत्तरकाण्ड 49/3)

उपसंहार :-

यह जगत भगवान का आदि अवतार है-'आद्योऽवतार: पुरुष: परस्य' (श्रीमद्‌भागवत 2/6/41)। एक परमात्मा ही अनेक रूप बन जाते हैं और फिर अनेक रूप का त्याग करके एक रूप हो जाते हैं। अनेक रूप से होने पर भी वे एक ही रहते हैं। वे एक रहें या अनेक हो जायँ, यह उनकी मरजी है, उनकी लीला है। एक सोने के सैकड़ों गहने बन जायँ और फिर गहने पुन: सोना हो जायँ अथवा एक खाँड़ के सैकड़ों खिलौने बन जायँ और फिर खिलौने पुन: खाँड़ हो जायँ, फर्क क्या पड़ा? ऐसे ही भगवान कुछ भी बन जायँ, फर्क क्या पड़ा? तत्त्व एक ही है और एक ही रहेगा। उस एक तत्त्व के सिवाय कभी कुछ हुआ नहीं, है नहीं, होगा नहीं, हो सकता ही नहीं। एकमात्र भगवान ही थे, भगवान ही हैं और भगवान ही रहेंगे। वे एक ही भगवान प्रेमी और प्रेमास्पद का रूप धारण करके प्रेम की लीला करते हैं। उस प्रतिक्षण वर्धमान परमप्रेम की प्राप्ति में ही मानव जीवन की पूर्णता है।

हे जग के करतार तेरी कहा अस्तुति कीजै।
तू ही एक अनेक भयो है, अपनी इच्छा धार।।
तू ही सिरजै तू ही पालै, तू ही करै सँहार।
जित देखूँ तित तू-ही-तू है, तेरा रूप अपार।।
तू ही राम, नारायण तू ही, तू ही कृष्ण मुरार।
साधौं की रक्षाके कारण, युग युग ले औतार।।
तू ही आदि अरु मध्य तुही है, अन्त तेरा उजियार।
दानव देव तुही सूँ प्रकटे, तीन लोक विस्तार।।
जल थल में व्यापक है तू ही, घट-घट बोलनहार।
तो बिन और कौन है ऐसो, जासों करों पुकार।।
तू ही चतुर शिरोमणि है प्रभु, तू ही पतित उधार।
चरणदास शुकदेव तुही है, जीवन प्राण अधार।।

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

.... इस प्रकार बलराम जी ने प्रलम्बासुर का वध कर ग्वाल-बालों को भयमुक्त किया।

अगला जो प्रकरण है वह अपने आप में बड़ा अद्‌भुत और अनुपम प्रकरण है। वृन्दावन में वर्षा और शरद ऋतु का वर्णन, यह 20वां अध्याय और इस बीसवें अध्याय में भगवान व्यास जी का काव्यात्मक जो वर्णन की शैली है वह तो अद्‌भुत है ही, सुखदेव जी की निरूपण की शैली बड़ी अद्‌भुत है। यह अध्याय इतना महत्वपूर्ण है कि इसके भावों पर गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज इतने अधिक रीझ गए कि श्रीमद् भागवत का वर्षा ऋतु वर्णन पढ़ लीजिए और श्री रामचरितमानस का वर्षा ऋतु वर्णन पढ़ लीजिए दोनों एक ही है, बस ऐसा लगता है यहाँ के श्लोकों को बिल्कुल दोहे चौपाई में अनुवाद करके गोस्वामी जी ने वहाँ प्रतिष्ठित कर दिया।

तयोस्तद्‌भुतं कर्म दावाग्नेर्मोक्षमात्मनः।
गोपाः स्त्रीभ्यः समचख्युः प्रलंबवधमेव च ।।

आज गोचारण लीला के बाद जब ग्वाल बाल लौट के घर आए हैं तो उन्होंने अपनी बहन, माँ आदि जो घर की स्त्रियाँ हैं उनसे भगवान कृष्ण बलराम ने जो अद्‌भुत लीला आज की है, अद्‌भुत कर्म जो किया है, प्रलम्बासुर का एक घूंसे में दाऊजी ने उद्धार जो किया है और चारों ओर से आग लग गई थी, हमारी गाएं और हम सब चारों ओर से अग्नि में घिर गए थे उस भयंकर अग्नि को श्री कृष्ण ने पी लिया, ये दोनों लीलाएं- प्रलम्बासुर के उद्धार की लीला और भगवान के अग्नि पीने की लीला ग्वालबालों ने घरों में आकर के सुनाई। उसको सुनकर के ज्ञानवृद्ध-वयोवृद्ध गोप गोपियों अत्यंत आश्चर्य चकित हो गए, विस्मित हो गए और मेरे देवा प्रवाह कृष्णा राम भजन बताओ और उन्होंने मान लिया कि वस्तुत कृष्ण बलराम कोई साधारण ग्वालबाल, गोपालक नहीं है, ये कोई बड़े देवता है, ब्रज में ग्वाल वेश में पधारे हैं। आप लोग कहेंगे ऐसा क्यों सोचा उन लोगों ने? गर्गाचार्य जी तो नामकरण के समय आकर स्पष्ट कर गए हैं-

आसन् वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः।
शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः।।
प्रागयं वसुदेवस्य क्वचित् जातस्तवात्मजः ।
वासुदेव इति श्रीमान् अभिज्ञाः संप्रचक्षते ।।
बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि च सुतस्य ते ।
गुणकर्मानुरूपाणि तान्यहं वेद नो जनाः ।।
एष वः श्रेय आधास्यद् गोपगोकुल-नन्दनः ।
अनेन सर्वदुर्गाणि यूयं अंजस्तरिष्यथ ।।
पुरानेन व्रजपते साधवो दस्युपीडिताः ।
अराजके रक्ष्यमाणा जिग्युर्दस्यून् समेधिताः ।।
य एतस्मिन् महाभागाः प्रीतिं कुर्वन्ति मानवाः।
नारयोऽभिभवन्त्येतान् विष्णुपक्षानिवासुराः ।।

गर्गाचार्यजी ने कहा- यह जो साँवला-साँवला है, यह प्रत्येक युगमें शरीर ग्रहण करता है। पिछले युगों में इसने क्रमशः श्वेत, रक्त और पीत-ये तीन विभिन्न रंग स्वीकार किये थे। अबकी यह कृष्णवर्ण हुआ है। इसलिये इसका नाम 'कृष्ण' होगा। नन्दजी! यह तुम्हारा पुत्र पहले कभी वसुदेवजी के घर भी पैदा हुआ था, इसलिये इस रहस्य को जानने वाले लोग इसे 'श्रीमान् वासुदेव' भी कहते हैं। तुम्हारे पुत्र के और भी बहुत-से नाम हैं तथा रूप भी अनेक हैं। इसके जितने गुण हैं और जितने कर्म, उन सबके अनुसार अलग-अलग नाम पड़ जाते हैं। मैं तो उन नामों को जानता हूँ, परंतु संसार के साधारण लोग नहीं जानते। यह तुम लोगों का परम कल्याण करेगा। समस्त गोप और गौओं को यह बहुत ही आनन्दित करेगा। इसकी सहायता से तुम लोग बड़ी-बड़ी विपत्तियों

को बड़ी सुगमता से पार कर लोगे। व्रजराज! पहले युग की बात है। एक बार पृथ्वी में कोई राजा नहीं रह गया था। डाकुओं ने चारों ओर लूट-खसोट मचा रखी थी। तब तुम्हारे इसी पुत्र ने सज्जन पुरुषों की रक्षा की और इससे बल पाकर उन लोगों ने लुटेरों पर विजय प्राप्त की। जो मनुष्य तुम्हारे इस साँवले-सलोने शिशु से प्रेम करते हैं, वे बड़े भाग्यवान् हैं। जैसे विष्णु भगवान के करकमलों की छत्रछाया में रहने वाले देवताओं को असुर नहीं जीत सकते, वैसे ही इससे प्रेम करने वालों को भीतर या बाहर किसी भी प्रकार के शत्रु नहीं जीत सकते।

तस्मात् नन्दात्मजोऽयं ते नारायणसमो गुणैः।
श्रिया कीर्त्यानुभावेन गोपायस्व समाहितः।।

इसलिये नन्दजी! चाहे जिस दृष्टि से देखें- गुण में, सम्पत्ति और सौन्दर्य में, कीर्ति और प्रभाव में तुम्हारा यह बालक साक्षात् भगवान नारायण के समान है। तुम बड़ी सावधानी और तत्परता से इसकी रक्षा करो, इस प्रकार नन्दबाबा को भलीभाँति समझाकर, आदेश देकर गर्गाचार्यजी अपने आश्रम को लौट गये। उनकी बात सुनकर नन्दबाबा को बड़ा ही आनन्द हुआ। उन्होंने ऐसा समझा कि मेरी सब आशा-लालसाएँ पूरी हो गयीं, मैं अब कृतकृत्य हूँ।

और बड़े-बड़े चमत्कार अब तक प्रकट हो चुके हैं जिनसे यह बात प्रमाणित हो गई की कृष्ण बलराम साक्षात परम् परमात्मा है। यह बात प्रमाणित हो चुकी है फिर भी बृजवासी स्वीकार करने के लिए राजी क्यों नहीं हैं? वे इतना ही आज क्यों कह रहे हैं कि हमें ऐसा लगता है कि ग्वाल वेश में कोई बड़े-बड़े दो देवता हमारे यहाँ आए हैं? उसका कारण यही है कि भगवान की मधुराती मधुर लीलाएं ऐसी हैं कि उनको देखकर बड़े-बड़े ज्ञान विज्ञान संपन्न भी मोहित हो जाते हैं। आह! यह कैसी है भगवान की निराली माया! **जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई। बरिआई बिमोह मन करई।। जेहिं बहु बार नचावा मोही। सोइ ब्यापी बिहंगपति तोही।।** भगवान स्वयं अपनी मधुर लीलाओं से गोप गोपियों के मन को इस प्रकार से मोहित कर लेते हैं कि विशेष माधुर्य रस में डूब जाने के कारण वे भगवान के ऐश्वर्य को भूल जाते हैं। क्यों भूल जाते हैं? इसलिये भूल जाते हैं कि अगर वे नहीं भूलेंगे तो लीला ही नहीं बनेगी। अगर गोप-गोपियों श्री कृष्ण को परब्रह्म परमात्मा मानकर, भगवान मानकर व्यवहार करेंगे तो उनके साथ जो मधुर-मधुर लीलाएं हो रही हैं वे नहीं होगी।

अच्छा एक बात बताओ परब्रह्म परमात्मा को कोई यह लालच दे सकता है कि तू गैया चराकर ला तो हम तुम्हें माखन रोटी देंगे? क्या भगवान के घर में खाने को नहीं है? नौ लाख तो दूध देने वाली गैया हैं। छाछ इतनी होती है कि रखने की तो नंद महल में जगह नहीं है। आज भी नंदगांव में छाछ कुंड है। सरोवर में छाछ भरी रहती थी और गोपी कहती है-

तोय माखन रोटी दे दूंगी चराए ला मेरी गैया।
तोय माखन रोटी दे दूंगी चराए ला मेरी गैया।

अब सोचो यह परब्रह्म परमात्मा मानकर व्यवहार होगा? बिलकुल भूल गई हैं ये परमात्मा हैं।

तोय माखन रोटी दे दूंगी चराए ला मेरी गैया।
तोय माखन रोटी दे दूंगी चराए ला मेरी गैया।

ठाकुरजी बोले नहीं जाऊँगो तेरी गैया चराने। गोपी बोले क्यों? ठाकुरजी ने कहा- हमारे घर में दही ना है क्या? गोपी बोली- है तो सही पर मोहे जैसो दही जमाववो तेरी मैया को नहीं आवे।

कोरी-कोरी मटकी में दही जमायो। -4
पहले तोय जिमाए दूंगी चराए ला मेरी गैया।
तोय माखन रोटी दे दूंगी चराए ला मेरी गैया। -2

कान्हा बोले- और क्या देगी तू? गोपी बोली तू जब गैया चराने जायेगा तब मैं छकियारी बनकर आऊँगी, छाछ लेकर आऊँगी। देख लाला तोहे छाक में क्या लेकर आऊँगी? *टेंटी को साग बेझर की रोटी -4*

पहले तोय जिमाए दूंगी, चराए ला मेरी गैया।
अरे तोय माखन रोटी दे दूंगी, चराए ला मेरी गैया।

लाला तू हमारी गैया चरा के लायेगा तो और तूझे क्या दूंगी पता है? तेरी जो यह बांसूरी है यह तो ऐसे ही है, यह तो बांस की डण्डी है-

हरे बांस की जो बांसूरिया -4
वामे नग मोती जड़वाए दूंगी, चराए ला मेरी गैया।
तोय माखन रोटी दे दूंगी, चराए ला मेरी गैया।

और क्या करेगी तू?

चंद्र सखी भज बाल कृष्ण छवि -4
तोहे नैनन बीच बसाए लूंगी, चराए ला मेरी गैया।
तोय माखन रोटी दे दूंगी, चराए ला मेरी गैया।

सम्पूर्ण वृन्दावन की भूमि रत्नमयी, मणिमयी, चिन्मयी है। करोड़ों-करोड़ों चिंतामणियाँ बिछी हुई है वृंदावन की भूमि में। संकल्प किया वह वस्तु वहाँ प्रकट हो जाती है। गोपी कहती है- तेरे हरे बांस की बांसुरिया पर मोती नग जड़वाए दूंगी- ऐसे लगता है जैसे भगवान बहुत गरीबी हालत में हैं। यह मधुर लीला है। क्योंकि इस प्रकार का जो दिव्य मधुर रस है वो तब तक प्रकट नहीं हो सकता है, जब तक कि गोप गोपियों के ऐश्वर्य ज्ञान की चोरी ना हो जाए। इसलिए ठाकुर जी अपनी मधुराती मधुर रसमई लीलाओं का विस्तार करने के लिए ग्वाल बालों के भीतर जो भगवत भाव जाग गया है, ऐश्वर्य भाव जाग गया है उसकी चोरी ठाकुर जी कर लेते हैं, लेकिन कभी-कभी जब बड़े चमत्कार होते हैं तो कहते हैं- रे भैया! ऐसा लगे कि ये कृष्ण बलराम सामान्य गोपालक ना है। ये तो कोई बड़े देवता हमारे यहाँ ग्वारिया बनकर आए गए हैं। अब इनसे थोड़ा सावधान होकर के व्यवहार करना पड़ेगा।

ततः प्रावर्तत प्रावृट् सर्वसत्त्वसमुद्भवा।
विद्योतमानपरिधिः खं च क्षुभितमभ्रवत्।।

इसके बाद वर्षा ऋतु का शुभागमन हुआ, जो सभी प्राणियों को जीवन और समृद्धि देने वाली है। उस समय आकाश में बिजली चमकने लगी और घने बादलों के घिर जाने से पूरा आकाश क्षुब्ध (अशांत) दिखाई देने लगा।

निशामुखेषु खद्योतास्तमसा भान्ति न ग्रहाः।
यथा पापेन पापिष्ठा न वेदा न द्विजातयः।।

वर्षा काल में रात की शुरुआत होते ही अंधकार में जुगनू चमकने लगते हैं, लेकिन तारे और ग्रह छिप जाते हैं। यह दृश्य ऐसा लगता है मानो कलियुग में पाप बढ़ जाने के कारण पाखंडी लोग चमकने लगे हों और वेद व सदाचारी ब्राह्मण लुप्त हो गए हों।

हरिता हरीणिछन्ना शष्पशैलूषविग्रहा।
बभौ भूः सार्द्धमुद्योता क्षीरिणीव नृपश्रियः।।

नई हरी-भरी घास उग आने और इंद्रगोप (मखमली कीड़ों) के लाल रंग से धरती सज गई है। उसे देखकर ऐसा लगता है मानो पृथ्वी ने रंग-बिरंगे वस्त्र पहन लिए हों। हरी-भरी और समृद्ध धरती किसी ऐश्वर्यशाली राजा की तरह सुशोभित हो रही है।

निषेवया वर्षरूपाः करर्षितापि भूः पुनः।
पुष्टाभवद्यथा कायो भक्त्या संसेवितो हरेः।।

ग्रीष्म ऋतु की कड़ी धूप से सूखी और दुर्बल हुई पृथ्वी, वर्षा का जल पाकर फिर से लहलहा उठी है। यह ठीक वैसे ही है, जैसे भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति और सेवा करने से मनुष्य का शरीर और अंतःकरण फिर से पुष्ट और आनंदित हो जाता है।

मार्गा बभूवुः सन्दिग्धास्तृणैश्छन्ना ह्यसंस्कृताः।
नाभ्यस्यमानाः श्रुतयो द्विजैः कालहता इव।।

वर्षा ऋतु में लगातार घास उगने के कारण सारे रास्ते ढ़क गए और उन्हें पहचानना कठिन हो गया। उनकी स्थिति ऐसी हो गई जैसे समय बीतने पर ब्राह्मणों द्वारा अभ्यास (स्वाध्याय) न किए जाने के कारण वेद मंत्र लुप्त हो जाते हैं।

सरितोऽनूप चक्रुश्च वीचिक्षोभकुलाः पथः।
यथा कामवशा चित्तं गृहं च मतिमात्मनः।।

...............शेष अगले अंक में

श्री राम कथा

(पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज)

श्री राम पंचायती मंदिर संगरिया

पिछले अंक से आगे........

तीन फल तो लोक में है- धर्म बढ़ेगा, कामनाएं पूरी होगी और अर्थ लाभ होगा। मोक्ष तो अलौकिक है, देह त्याग करके जायेंगे तब परलोक में मिलेगा, पर संत समाज रूपी प्रयाग में कहीं नहाते रह गए तो जीते जी मुक्ति भी मिल जाएगी और जीवन मुक्ति की अवस्था को हम प्राप्त होंगे। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय।

तो नाम को हम हल्केपन में नहीं लेना चाहते क्योंकि नाम ही हमारा परम धन है। नाम पर जायेंगे तो आपको अमल करना पड़ेगा। नाम कितना महत्व का है, नाम वंदना नौ दोहों में है 18 से 27 तक में और उतने प्रकरण को हम सामने लावें। कल किंचित शुरुआत करके आगे कथा सुना देंगे। हमारा जो यह पक्ष है मानस नवान्ह परायण का, सत्संग सत्र का इसकी मौलिकता नामपरक है, आप नाम को समझें नाम कल्याणकारी है। बाबा तुलसी का नाम कितना महत्व रखता है, चलो उन बातों को कहकर आज का सत्र पूर्ण करें।

तुलसी बाबा एक बार जल मार्ग द्वारा काशी से अयोध्या जा रहे थे। जल मार्ग से जाने जब लगे तो सरयू और गंगा जी का संगम आया वहाँ एक घाटी थी तो किनारे जो लोग खड़े थे उन्हीं से पूछ दिया- भैया यह कौन सी घाटी है? घाटी का नाम रामघाटी है। पूछा वो सामने वाला घाट का नाम क्या है? बोले रामघाट है। राम घाटी और रामघाट तो भैया यह नगर कौनसा है? बोले नगर का नाम रामपुर है। भैया यहां के राजा कौन हैं? बोले यहाँ के राजा का नाम राम सिंह जी है। तुलसीदास जी सोचने लगे कि इनको कैसा अद्भुत राम नाम से प्रेम है? रामघाटी, रामघाट, रामपुर नगर और राम सिंह जी नाम का राजा! तुलसी बाबा ने कहा ऐसी पवित्र जगह को छोड़कर आगे बढ़ाना ठीक नहीं। बस उसी क्षण वहाँ डेरा डाल दिया। तुलसी बाबा जमातों में रहते, संतों की टोली साथ में रहती। राजा को समाचार पहुँचा। राजा रामसिंह जी आतुरता से आए। बाबा तुलसी जी की सेवा की, मानदान किया। प्रार्थना की बाबा अब तो यहीं भण्डारा देना पड़ेगा। यहीं सेवा लेनी होगी। बाबा तुलसी ने स्वीकार किया और तब से महीना बीत गया गंगा के घाट पर रह चुके, राम नाम से जुड़ा हुआ था- रामघाटी, रामघाट रामपुर और रामसिंह। यह राम नाम बाबा को ऐसे खींचा कि राम नाम की उस घाटी को छोड़ ही ना पाए। महीना वहीं पर सेवा लेते रहे और रही बात वहाँ के राजा और प्रजा की तो बाबा तुलसी जहाँ विराजमान हो रहे हैं वहाँ कोई नीरस कैसे रहेगा? राम सिंह जी सहित उनकी सारी प्राजा ने राम रस का पान किया, राम कथा का आस्वादन किया, सबने जुगल कण्ठी धारण की और सबने तारक मंत्र स्वीकार किया। बाबा तुलसी की खड़ाऊ अपने पूजा गृह में रखकर जब तक जीवन रहा उपासना किये।

सज्जनों! रामनाम की ऐसी लग्न बाबा तुलसी की थी। इन्हीं राम नाम की एक और महिमा आपको बता दूँ। यह राम नाम की महिमा श्रद्धा विश्वास से चलकर आए एक बाबा की है। बाबा तुलसी काशी में अस्सी घाट पर सत्संग सुना रहे थे और सत्संग में प्रायः विलंब हो जाया करता है। क्योंकि सत्संग कोई नौकरी नहीं है कि टाइम से छोड़ दिया जाए। यह तो भगवान की भीतरी चाकरी है। जब तक लेंगे तब तक सुनाएंगे। बीच में छोड़ना कठिन होता है। कौन है कौन नहीं है कहना इसके लिए आवश्यक नहीं है, पर जब तक वह चाकरी लें तो देना पड़ेगा। तो तुलसी बाबा ध्यान में स्थित थे और प्रवाह से कथा हो रही

थी। आज की तरह ऐसे ही सूर्यास्त हो गया और काशी की घटना, गंगा तट की कथा थी। उस कथा में श्रोता एक बाबा जी जिनकी गंगा पार में एक कुटिया थी और उसमें भगवान विराजमान थे। आरती का समय हो गया लेकिन कथा में हलचल तो कर नहीं सकते थे। मौन होकर सुन रहे थे। कथा जब पूरी हुई तो कहा बाबा आज विलम्ब ज्यादा हो गया, अब गंगा पार जाने हेतु कोई नाव भी मिलेगी नहीं, पर जाना आवश्यक है। अनर्थ हुआ बाबा आज भगवान की सेवा नहीं हो सकेगी।

तुलसी ने कहा- बाबा अनर्थ हुआ ही नहीं है राम नाम की महिमा समझनी चाहिए। तुलसी ने तुलसी दल पर 'राम' इतना लिखकर दिया और महात्मा से कहा इसे मुट्ठी में दबा दो, गंगाजी पर चलकर पार हो जाओगे। पार होने तक मुट्ठी खोलना मत। महात्मा गए बिल्कुल गंगा तट की कथा है, नौका वाला कोई नहीं मिला मौके पर जो गंगा पार करा दे। वह बाबा जी ने जब गंगा तट पर पैर रखा था तो बर्फ पर टिके ऐसे टिक गया। दूसरा पैर रखा तो वो भी टिक गया तब तो बाबा दौड़ते हुए गंगा पार हो गये। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय!

गंगा की धारा पर बाबा तुलसी की राम नाम की वह महिमा, उनकी वह निष्ठा कि राम नाम तुलसी दल पर लिख कर बाबाजी जल पर चलते-चलते चले गए। किनारा छूने वाले थे कि मन में विचार उठा कि बाबा तुलसी ने ऐसा क्या जादू किया, ऐसा क्या मेरी मुट्ठी में डाल दिया कि उसका इतना प्रभाव? महात्मा ने मुट्ठी खोली, देखा तो तुलसी दल पर केवल 'राम' लिखा था। बाबाजी ने सोचा यह तो कुछ नहीं है, केवल राम लिखा है। यह तो मैं भी जानता हूँ। बाबाजी को ज्यों ही ज्ञान का भान हुआ, आत्म अभिमान हुआ कि गटगटगट करके कण्ठ तक पानी आ गया, बाबा डूबने लगे। तब कहना क्या पड़ा? हे तुलसी के राम! बचा लो। मेरे राम की ताकत नहीं है, तुलसी के राम की ताकत है कि पैदल चलकर मैंने गंगा पार कर दी। भजते तो हम भी हैं, पर तुलसी का राम बचाता है। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय!

'श्रद्धाविश्वासरूपिणौ' जिसकी भगवान के नाम में अटूट श्रद्धा और विश्वास होगा उसके पैर पानी पर भी पैदल चलने योग्य हो जाएंगे। तुलसी के राम, तुलसी के राम को पुकारा तो दुहाई हुई और बाबा को निकाल दिया। यह राम नाम की निष्ठा है। इसलिए नाम वंदना की बात हम आपसे करेंगे और कल करेंगे। कीमती बात को हल्के में लेना ठीक नहीं है। हम लोग आए ही सत्संग के लिए है तो यहाँ का समय गवाना किस लिए है। एक-एक पैसा वसूलेंगे अपने कीमती समय का। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय! बोलो सीताराम जय सीताराम!

मानव जीवन की सार्थकता इन्हीं पावन कर्मो में निहित है। यह शरीर हमको केवल, केवल, केवल और केवल भगवान की भक्ति के लिए ही प्राप्त हुआ है। इस देह का अन्यथा कोई लाभ नहीं, अन्यथा कोई सुख नहीं। यह जीव कृतकृत्य हो जाए भगवान की भक्ति करके, परम लक्ष्य परमात्मा को यह जीव अपनी आंखों से एक बार देख ले, निहार ले इसी सिद्धि की ओर हमारी यात्रा होनी चाहिए। भगवान व्यास जी ने कहा है-

सोपानभूतं मोक्षस्य मानुष्यं प्राप्य दुर्लभम्।
यस्तारयति नात्मानं तस्मात्पापरतोऽत्र कः।।

जगत में मानव तन प्राप्त करने के बाद भी पुरुषार्थ पूर्वक अपने प्रभु को जिन्होंने जान न लिया मान न लिया, भला पापी और किसको कहा जाएगा। हम तो छोटी-छोटी बातों में दोष दर्शन के कारण किसी में न्यूनता का अध्ययन करने लग जाते है। बड़ा कठिन है, यह निंदित है, यह पतित है, इनकी कमजोरी है, हमारी आंखें भूलों को तलाशने में लगी है, भूलों को टटोलने में लगी है कि पता नहीं मैं

कितना बड़ा पापी हूँ, मेरे पाप का अंत कहाँ है? पाप का उच्चतम शिखर जो हो सकता है वहाँ बैठा हुआ हूँ क्योंकि अपनी आत्मा की मेरी ओर से कोई कदर ही नहीं है। मैंने अपनी ओर से परमात्मा को पाने का कोई प्रयास ही नहीं किया है। जिनके द्वारा परमात्मा के प्राप्ति का कोई साधन नहीं किया जाता है अन्यथा उसके कोई दूसरे कोई पापी नहीं होते हैं। पापी का शिरोमणि वही जीव है जिससे आत्म कल्याण की कोई चिंता ही नहीं बनती, जिन्हें अपने परमात्मा को रिझाने के लिए कोई साधन करने का मन ही नहीं करता। तो हम औरों को पापी कहने क्यों जाएं? हमसे बड़ा पापी कौन होगा? जो अपने पुरुषार्थ पूर्वक, अपनी साधनापूर्वक अपने हरि को रिझाने में लगे नहीं।

सोपानभूतं मोक्षस्य मानुष्यमं प्राप्य दुर्लभम्- मोक्ष की सीढ़ी रूपी मनुष्य शरीर है कि मिल गया, हो सकता है कई जन्मों के पुण्य हमारे उदित हुए हो, या भगवान ने अपनी करुणा अपनी कृपा से हमें अवसर प्रदान किया हो, यह जीब इतनी योग्यता नहीं रखता है कि बार-बार मनुष्य ही बन जाए पर परमात्मा दया करना चाहते हैं, जीव की गति, जीव के उद्धार के प्रति भगवान सावधान होते हैं और यह मौका हम सबको मिल जाता है।

सज्जनों! मानव तन नहीं है यह सीढ़ी है। किसी भी मकान पर, भवन पर चढ़ने के लिए हम लोग सीढ़ी काम लेते हैं। मकान की छत लगाकर नहीं रुक जाते उसमें सीढ़ियां बनाते हैं क्योंकि अगली मंजिल का भी पूरा लाभ लेना है, छत का भी सदुपयोग करना है। छत तक जाने के लिए बनाए गए भवन में सीढ़ियां अपेक्षित है, आवश्यक है, होना ही चाहिए। तभी आप समझ पाएंगे। वैसे ही जगदात्मा प्रभु ने केवल मानव तन नहीं दिया है, केवल हाड मांस का पिंजर मानकर के भूल कर ले तो बात अलग है। पर यह सीढ़ी है। कहाँ के लिए? मोक्ष सुख के लिए। परमात्मा का यह जो पंडाल की छत है यही परमात्मा का बैकुंठ है, यही साकेत है, यही परमपद है, यही निर्वाण लोक है, यही गोलोक साकेत है और इस छत को हमें छूना है, इस छत तक जाने का साधन क्या होगा? यह काम मानव तन से किया जा सकता है। यह सीढ़ी है। इस सीढ़ी के सहारे इस छत को छू सकते हैं। मानव तन से इसे पाया जा सकता है। इस तन की इतनी कदर होनी चाहिए, इतनी गंभीरता से जीवन को जीना चाहिए। तो हम अपने लक्ष्य तक पहुँच जाएंगे। सोपानभूतम मोक्षस्य मनुष्यं।

सज्जनों! जिन्होंने अपनी आत्मा का उद्धार नहीं कर लिया इस तन को प्राप्त करने के बाद तो उसके अलावा हम पापी कहने किसको जाएं क्योंकि मैं ही अपने आप से बेखबर जी रहा हूँ, मुझे ही पता नहीं में कहाँ जा रहा हूँ। अपने जीवन की यात्रा का मुझे कोई लक्ष्य निर्दिष्ट नहीं हो पाया, केंद्रित नहीं हो पाया, लक्षित नहीं हो पाया और दोष हम दुनिया में देखे जा रहे हैं। इस भूल से ऊपर उठकर अपनी आत्मा के कल्याण की ओर हम सबको बढ़ाना चाहिए।

सज्जनों! आत्मा का उद्धार होना आवश्यक है और यह इसी शरीर से संभव है। यहाँ भूल करने वाले लोग बड़े दुष्परिणाम भोगते हैं। हमारे उपनिषदों में पहला उपनिषद है जिसका नाम है- ईशावास्योपनिषद उसमें दूसरे मंत्र या तीसरे मंत्र में लिखा है-

असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽवृताः।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

असूर्या नाम का लोक है जो अंधेरे में डूबा रहता है। कैसा है यह लोक? जहाँ सूरज का प्रकाश नहीं जाता हो, अंधकार ही अंधकार रहता है जहाँ। वह घने अंधकार से भरा हुआ लोक है। मरने के बाद इस लोक में, अंधेरे में उन लोगों को भेजा जाता है जो अपनी आत्मा के कल्याण के लिये सावधान नहीं है, मनुष्य शरीर मिलने के बाद भी आत्मा के कल्याण के लिये कुछ नहीं करके भोगों में ही डूबे रहते हैं। वे ही असली आत्म हत्यारे हैं।.......लगातार

शिव महापुराण कथा

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

.... वैष्णव मार्ग में वैष्णवों को निवेदन करते हैं आचार्य स्वरूप कि नल का पानी सेवा में काम मत लो तो उसके पीछे भी यही कारण है। यह नहीं है कि नल बहुत बुरा होता है। वो इसलिये मना करते हैं क्योंकि उसमें से जो जल आता है उसकी शुद्धि की कोई गारंटी नहीं। अब क्या पता वह जो जल है वह कोई नदी में से भेज रहे हैं, बांध में से भेज रहे हैं या ऐसे ही इन मल मूत्र को रिसाइकल करके और पता नहीं क्या क्या इसमें इसमें डालते होंगे आप लोग जानते हैं। इसकी कोई पद्धति है, आप लोग जानते होंगे।

नल में आने वाला जल कैसा आ रहा है क्या पता चले। इसलिए सभी हरि भक्तों को विनती करता हूँ कि चाहे शिव को जल अर्पण करना हो, चाहे श्री हरि के लिए जल का व्यवहार करना हो जल की शुद्धि का जरूर विचार करें। भगवत सेवा में, शिव सेवा में जल तो प्रधान तत्व है, शिव सेवा में जल हरि सेवा में जल तो प्रधान तत्व है। शिवजी का जलाभिषेक बिना जल के तो कैसे होगा? बिना जल के तो शिवजी का जलाभिषेक नहीं हो सकता? बिना जल के ठाकुर जी की सामग्री कैसे सिद्ध होगी। झारी कैसे भरी जाएगी, उनका स्नानादि कैसे होगा? इसलिए भैया जल शुद्धि के ऊपर ध्यान दें। अधिक न बन सके तो कम से कम आपके ठाकुर जी की सेवा जितना जल आप जहाँ से एकदम आपको संतुष्टि हो कि यह जल शुद्ध है, पवित्र है, इसमें कोई अन्य नहीं मिला हुआ है उसी जल का व्यवहार भगवत सेवा में करना चाहिये। तो जल भगवान शिव को अर्पण करना है, लेकिन अब जल की शुद्धि का कहाँ से लाएं प्रमाण। फल फूल अर्पण करें तो उसकी भी कोई शुद्धि का प्रमाण नहीं। दूध आदि भी अर्पण करना लेकिन उसका भी कोई शुद्धि का प्रमाण नहीं। इसलिए भैया अंत:करण की उपासना हमेशा शुद्ध होती है।

इसलिए और कुछ नहीं कर सको तो सबसे सरल जो शिव की प्रसन्नता का उपाय है वह है शिव के पास शांत होकर बैठ जाएं। यह उपासना आप घड़ी दो घड़ी, घड़ी दो घड़ी, आधी घड़ी, 6 मिनट, 12 मिनट, 24 मिनट जितना आपसे बने उतनी देर शिवालय में शांत होकर बैठें, शिवालय में शांत होकर बैठें। हमारे दक्षिण भारत में तमिलनाडु में कोयंबटूर में केंद्र है उस केंद्र में भगवान शिव का बड़ा विशाल शिवलिंग है उसका नाम है ध्यान लिंगम। ध्यान लिंगम क्या आप में से किसी ने देखा है, दर्शन किया है? एक माताजी ने देखा, दो तीन भाई साहब आपने भी देखा। तो आपने वहाँ देखा होगा, उस पर कोई जल नहीं चढ़ाता है। सभी लोग आसपास, चारों तरफ बैठकर ध्यान करते हैं। क्यों? शिव मंदिर में तो जो भी जाता है, उसका मन करता है कि जल चढ़ाऊँ। और कैसे जल चढ़ाते है? कहाँ से जल लिया, कहाँ से पात्र लिया और लेकर हड़बड़ी! वो इस पर गिर रहा है, वो उस पर गिर रहा है। देखकर बहुत विचार आता है। कभी-कभी तो ऐसा देखा है कि प्लास्टिक की थेली होती है उसका एक कोना फाड़ा और थैली से ही सीधा पानी चढ़ा दिया। अगर आपके दामादजी आए तो उनको दूध पिलाना है तो क्या ऐसे ही सीधी थेली पकड़ा देंगे? भगवान शिव को इससे कोई बुरा तो नहीं लगता है लेकिन क्या यह हमारी शिष्टता है? क्या ऐसे शिव उपासना योग्य है? क्या यह हमारी भक्ति का स्वरूप योग्य है? देखो भाई कोई जूता पहन कर भी शिवजी पर चढ़ा तो शिवजी राजी हो गए। लेकिन भगवान के साथ ऐसा व्यवहार योग्य नहीं है।

कथा सुनिए- एक चोर था, वह दिन भर भटका लेकिन उसको कोई माल मिला नहीं। कुछ भी नहीं मिला तो उसने सोचा आज घर पर सब क्या खायेंगे? चोरी में कुछ नहीं मिला तो रोटी कैसे खाऊंगा। आज मुझे हाथ साफ करने को जगह नहीं मिली। तो वह एक मंदिर मैं चला गया। वहाँ क्या मिलता, कुछ नहीं मिला। उसने देखा यहाँ और तो कुछ है नहीं, ऊपर घंटा लटक रहा है। उसने सोचा आज तो इस घंटे से ही काम चल जाएगा, पर घंटा उतारूं कैसे? वहाँ कोई उतारने को है नहीं। उसने देखा और तो कुछ है नहीं, यह शिवलिंग है तो इसी पर चढ़ जाऊँ। तो चोर जूता पहने ऊपर चढ़ गया। जैसे ही वह शिवलिंग पर चढ़ा तो घंटा बजा और शिवजी प्रगट हो गए- वाह! प्यारे! मांग वरदान। मैंने ऐसा क्या किया कि आप वरदान दोगे? मैं तो चोर हूँ, घण्टा चुरा रहा था।

अरे भैया! तूने क्या नहीं किया यह बता? तूने तो वो किया है जो आज तक दुनिया में किसी ने नहीं किया। इसलिये तूझे वरदान देने आया हूँ। यहाँ तो किसी ने धतूरा चढ़ाया, किसी ने जल चढ़ाया, किसी ने बिल्व पत्र चढ़ाया, किसी ने फूल चढ़ा दिये होंगे, पर तू तो खुद ही चढ़ गया और वह भी जूतों सहित। इतनी भी चीज तूने पीछे नहीं छोड़ी। यह सच है कि जो अनजाने में होता है उससे तो भगवान शिव ऐसे राजी हो जाते हैं, लेकिन हम प्रमादवश अगर ऐसा करते हैं यह अपराध होता है। क्षमा करें अनजान में ऐसा हुआ वह तो क्षम्य है, उससे तो भगवान प्रसन्न हो जाते हैं, मगर जानबूझकर या प्रमाद में कभी देव उपेक्षा न करें। कभी-कभी कोई छोटा बालक घर आए हुए अतिथि या मामा के लिए हाथ में सूखी रोटी लाकर कहे कि आप पाओ इसे तो अतिथि उस पर प्रसन्न हो जाते हैं, नाराज नहीं होते हैं, मुस्कराते हैं। क्योंकि वह अतिथि से प्रेम रखता है और अतिथि उससे प्रेम रखते हैं। बालक की इस क्रिया से तो वह मामा मुस्कुराते हैं, नाराज नहीं होते क्योंकि मामा जानते हैं कि यह अनजान है पर प्रेम से भरा हुआ है और हम जो कर रहे हैं वह अनजाने में नहीं कर रहे हैं, प्रमादवश कर रहे हैं। मेरे भाई बहन! ध्यान दीजिएगा प्रमादवश भगवत उपासना, भगवत सेवा में की गई उपेक्षा सामग्री की अपेक्षा वह अपराध के अंतर्गत आती है, अपराध के अंतर्गत।

एक बार किसी जगह कोई एक अनुष्ठान था समझो ग्रह शांति यज्ञ होगा। वहाँ पर मैं भी कोई कारण से उपस्थित था। अब पूजन सामग्री तो बाजार से आ गई और पात्र टेंट वाले। टेंट की प्लास्टिक वाली प्लेट, वो सफेद-सफेद कटोरियाँ, उसी में किसी में चंदन, किसी में कुमकुम, किसी में चावल। ऐसे ही गिलास स्टील की काली पड़ी हुई, लोटा भी नहीं, आहुती के लिये लकड़ी के आगे चम्मच बांध दिया। समर्थ थे, क्या नहीं था उनके पास मगर प्रमादवश कि यह सब चलेगा, कौन झंझट करें। बोलने का मन हुआ मगर चुप रहा क्योंकि मैं तो वैसे ही बुलाने पर गया था वहाँ तो उठकर चला आया लेकिन मेरे भाई बहन यह क्या है, यह प्रमाद है।

तो भगवान शिव की प्रसन्नता का सबसे सुंदर जो कार्य है वह है उपासना का और शिव उपासना का सबसे उत्तम स्वरूप है- उनके समीप शांत होकर बैठना। आप कभी भी किसी शिवालय में जाएं थोड़ी देर के लिए वहीं शांत होकर बैठ जाएं। **शांतं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशांतिप्रदं**- भैया इसलिए ध्यान दीजिए! प्रभु के पास, शिव के पास आप शांत होकर बैठें। अगर आपके घर में भगवान शिव का स्वरूप विराजमान हो, चाहे छोटेसे शिवजी हो, नर्मदेश्वर हो बस आपको जब भी समय मिले उनके सामने शांत होकर बैठ जाएं। अन्य देवों के पूजा का काल होता है- किसी की सुबह पूजा होती है, किसी की शाम को। ऐसे ही शिव पूजन का भी काल होता है-कौनसे काल में पूजन करना है, कौनसे

काल में अभिषेक करना है, शिव पूजन का भी काल होता है। लेकिन यदि आपको शिव के पास बैठकर उपासना करनी है तो आपको 24 घंटे छूट है। आपको उनको जल चढ़ाना है तो उसका एक निश्चित समय होगा, आपको उनका रुद्राभिषेक करना है तो उसका एक निश्चित काल होगा, आपको उन्हें बिल्व पत्र अर्पण करना है तो उसका एक काल होगा, आपको उनका श्रृंगार करना है तो उसका एक काल होगा लेकिन आपको उनके पास बैठकर ध्यान करना है तो 24 घंटे शिवजी आपको अनुमति देते हैं।

आप कभी भी बैठ सकते हैं। आपका मन असहज है तो कुछ मत करिए सीधे जाकर के शिव के समीप आसनस्थ हो जाइए। पद्मासन लगे कि हनुमत आसन लगे, सुखासन लगाओ, सुखासन यानि जिसमें आप आराम से बैठ सकते हैं, बस आराम से बैठ जाइए और कुछ मत करिए बस या तो शिव के स्वरूप पर ध्यान लगाइए या हरि चरणों में ध्यान लगाइए या नाम स्मरण में ध्यान लगाइए पर इतना ध्यान रखिए आंखों को भूल जाइए कि आंखों को कुछ देखना आता है यह भूल जाएं, कानों को सुनना आता है यह भूल जाएं, जीव को स्वाद चाहिए यह भूल जाइए, पैरों को चलना आता है यह भूल जाइए, हाथों को कुछ काम करना आता है यह भी भूल जाइए और बस जैसे सामने शिवलिंग है भैया ऐसे आप आत्मलिंग बन जाएं।

''शिवो भूत्वा शिवं यजेत'' यह प्रसिद्ध शास्त्र वाक्य है। मुझे आज से 30 साल पहले यह कंठस्थ हो गया था। शिव की पूजा शिव बनकर ही कर सकते हैं। शिवो भूत्वा, शिवम यजेत्- शिव बनो और फिर शिव का पूजन करो। वहाँ ब्रह्म लिंग है जो आपके सामने है वह भी ब्रह्म लिंग है आप आत्मलिंग बनो। आत्म लिंग यानि देह कुछ नहीं है जो है वह बस आनन्द ही आनन्द है।

अरे मैं हूँ आनंद, आनंद है मेरा,
है मस्ती ही मस्ती और कुछ नहीं है,
जहाँ मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है,
मुझे मेरी मस्ती कहाँ ले के आई।
मुझे शिव की भक्ति कहाँ ले के आई।
शिव और मैं हूँ, मैं हूँ और शिव है,
शिव मैं ही मैं हूँ और मुझमें ही शिव है,
मैं और शिव फिर जुदा कुछ नहीं हैं।
शिव और मुझमें जुदा कुछ नहीं है।
मुझे मेरी मस्ती कहाँ ले के आई।

कृपानाथ! शिव को अनुभव करिए! शिव को अनुभव करें। पिता से सिर्फ जेब खर्च की गरज रखने वाला पुत्र पिता के गुणों को कभी समझ नहीं पाता है, उसी प्रकार शिव से कामना रखने वाला भक्त कभी शिव को भी नहीं समझ पाता। शिव आपको अपने साथ एक करने का, एक होने का निमंत्रण देते हैं। जो आपको अपने में मिलाने को तैयार है, जो आपको स्वयं के साथ एक करने को तैयार है और आप है जो बेटा दे दो, पोता दे दो, नौकरी दे दो, पैसा दे दो, फैक्ट्री दे दो, दुकान दे दो करते रहते हो। फिर से कहूँ जेब खर्च के लिए जो बेटा बाप से मतलब रखता है वह बाप के गुणों को कब समझेगा। हमारी भी दशाएं ऐसी ही है, हमारी भी स्थिति ऐसी ही है।

कृपानाथ! भगवान शिव आशुतोष है। आशुतोष का मतलब होता है बहुत जल्दी प्रसन्न होने वाला। आशुतोष-बहुत जल्दी प्रसन्न होने वाला। करुणा निधान! आपको और एक बात बताता हूँ। आप सुनेंगे तो शायद बहुत हसेंगे भी और शायद सोचेंगे भी। भगवान शिव के पास सभी सिद्धियाँ और समृद्धि हैं। रिद्धि-सिद्धि तो शिवजी की बहुएं ही हैं। गणेश जी शिव जी के बेटे हैं, रिद्धि-सिद्धि उनकी दोनों पत्नियों हैं तो यह सब चीज शिवजी के आसपास ही रहती है। ससुर जी के साथ ही तो सब बेटा बहू रहते हैं और शिव परिवार तो अपनी एकता के लिए अपने आपसी सामजस्य के लिए प्रसिद्ध है। सिंह और नंदी दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं ......

सनातन धर्म

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

........पिछले अंक से आगे

(2) ईश्वर एक नाम-रूप अनेक

हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।। साधकों द्वारा अपनी-अपनी समझ तथा रुचि के अनुसार ईश्वर के अनेक रूप माने गए हैं- साकार, निराकार, सगुण, निर्गुण, राम, कृष्ण, शिव, शक्ति, गणेश, सूर्य आदि तथापि अनुभव के बाद कोई विवाद नहीं सभी रूप और नाम एक ईश्वर में समा जाते हैं। हिंदू संस्कृति में सभी शास्त्र, सभी संत एकमत से कहते हैं कि ईश्वर एक है उसके रूप अनेक है- **'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'** परम सत्य (ईश्वर) एक ही है, लेकिन विद्वान लोग उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हैं। **'हरि व्यापक सर्वत्र समाना'** वह ईश्वर सर्वव्यापी है अर्थात सब जगह, सब काल में तथा सभी में समान रूप से परिपूर्ण है। सब रूप उसी के हैं।

वदन्ति तत्तत्त्वविदस्तत्त्वं यज्ज्ञानमद्वयम्।
ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते।।

परम सत्य को जानने वाले विद्वान उस एक ही अद्वैत तत्व को तीन नामों से पुकारते हैं-ज्ञान मार्ग वाले उसे **ब्रह्म** (निराकार), योग मार्ग वाले **परमात्मा** (अंतर्यामी) और भक्ति मार्ग वाले उसे **भगवान** (साकार) कहते हैं। वस्तु एक ही है, केवल पुकारने के नाम अलग हैं।

अत: कोई रूप छोटा-बड़ा नहीं। अपनी रुचि, योग्यता, विश्वास के अनुसार किसी एक रूप को मानो, शर्त इतनी है कि जिसको भी मानो उसको सबसे बड़ा मानकर साधना करे तो साधक अंतिम ध्येय को प्राप्त कर सकता है। गोपियों ने अपना इष्ट कन्हैया को माना, उनके लिये ईश्वर भी कुछ नहीं, बस एक कन्हैया ही सब कुछ, बाकी सब उसके ससुरे, सगे संबंन्धी होंगे। तुलसीदास जी ने रामजी को ही माना, तुलसी मस्तक तब नमे जब धनुष हाथ में होय। रामकृष्ण परमहंस के कालीमाता ही सब कुछ थी।

(3) अवतारवाद

सनातन धर्म में निर्गुण निराकार, सर्वसमर्थ प्रभु अवतार लेकर आते हैं, अन्य धर्मो-पन्थों में नहीं क्योंकि सनातन धर्म ईश्वर द्वारा प्रतिस्थापित है। अत: जब-जब इसमें ह्रास, पतन, हानि, गिरावट होती है, असुर, नीच, अत्याचारियों तथा अभिमनियों की वृद्धि होती है तब-तब प्रभु स्वयं हमारे बीच में विभिन्न प्रकार के शरीर धारण करके अवतरित होते हैं।

जब जब होई धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी।
सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी।।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

वे धर्म की रक्षा हेतु असुरों का तथा पापियों का विनाश करते हैं तथा धर्म की पुनर्स्थापना करते हैं। संतों, सज्जनों तथा उनके प्रेमियों के साथ खेलते-कूदते हैं, उनके भावों के अनुसार उन्हें विभिन्न प्रकार की लीलाओं से सुख देते हैं। भगवान केवल मनुष्य रूप में ही अवतार नहीं लेते हैं बल्कि समय और परिस्थिति की जैसी मांग होती है उसे अनुसार कीट, पतंग, सांप, पशु, पक्षी, मनुष्य आदि किसी भी रूप में अवतार ले सकते हैं उन्हें तो धर्म की पुनर्स्थापना करनी होती है। अत: इस हेतु जैसी आवश्यकता हो भगवान वैसे ही बन जाते हैं। कभी राम, कभी कृष्ण कभी वराह, कभी नरसिंह, कभी वामन, कभी परशुराम तो वर्तमान में ऐड्स भगवान का साक्षात अवतार है।

प्रेम के वश निर्गुण निराकार ब्रह्म, सगुण साकार बनकर हमारे बीच में हमारे साथ मनुष्य सा व्यवहार करते हैं।यह लीला अन्य धर्मों में देखने में

नहीं आता है उन लीलाओं को याद कर करके मनुष्य को ईश्वर से प्रेम हो जाता है। भगवान अपने एक अवतार से एक ही समय असंख्य कार्य सिद्ध करते है।

(4) ईश्वरोपासना

हिंदू संस्कृति में ईश्वर उपासना सदा से ही प्रधान रूप से चली आ रही है। हमारी संस्कृति में ईश्वरोपासना इतनी व्यापक तथा सरल है कि जितने व्यक्ति उतनी विधियां। कोई दो व्यक्ति भी ऐसे नहीं हो सकते कि जिनकी उपासना पद्धति सर्वांश में समान हो। साधना अवस्था में सबकी उपासना पद्धति अलग-अलग, सबके अपने-अपने ईष्ट, लेकिन सिद्ध अवस्था में सब मिलकर एक हो जाते हैं। रास्ता अलग-अलग लेकिन सभी एक ही मंजिल पर मिलते हैं।

पहुँचे-पहुँचे सब एक मत अपहुँचे मत और।
संतदास घड़ी अरठ की, ढूले एक ही ठौर।।

उपासना ईश्वर से नजदीकी अनुभव करने का साधन है। उपासना का अर्थ है ईश्वर के समीप बैठना या अपने मन को परमात्मा के स्वरूप में लीन करना। ध्यान, नाम जप, प्रार्थना, आरती, स्तुति कीर्तन, भजन, सेवा, निष्काम कर्म, भक्ति, ज्ञान, सहज साधना आदि कई उपासना पद्धतियां हमारे पूर्व ऋषि मुनियों द्वारा सुझाई गई है। जब कोई सनातनी उपासना करता है तो उसके अंतकरण में, नैत्रों में, भावों में केवल उसका इष्ट होता है, कोई अन्य नहीं। जबकि अन्य धर्मो में इतनी गहराई नहीं होती है।

ओ3म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।

हे संपूर्ण संसार को उत्पन्न करने वाले परमेश्वर! आप हमारे सब दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दु:खों को दूर कर दीजिए। जो सुखदायक और कल्याणकारी गुण, कर्म व स्वभाव हैं, उन्हें हमें प्रदान कीजिए।

हमें हमारे अधिकार, रुचि तथा समझ के अनुसार किसी एक उपासना पद्धति को स्वीकार कर अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।

(5) भगवत प्राप्ति प्रधान लक्ष्य

हिंदू संस्कृति में ऐसा मानना है कि मनुष्य शरीर हमें भगवत प्राप्ति हेतु ही मिला है। अत: सभी कार्य संसार में करते हुए भी हमारा लक्ष्य भगवत प्राप्ति का ही रहे। यदि किसी क्रिया से हमारी कामना पूर्ति होती हो करोड़ों में मिलने वाले हो लेकिन मुक्ति में बाधा पड़ती हो भगवत प्रेम प्राप्ति में रुकावट हो तो उसे त्याग देना चाहिए। क्योंकि हमारा लक्ष्य भगवत प्रेम प्राप्ति का है ना कि अर्थ और काम। हिंदू संस्कृति में अर्थ तथा काम का त्याग नहीं है बल्कि यह धर्म के आश्रित होने चाहिए, धर्म रहित अर्थ तथा काम महान अनर्थ पैदा करने वाला है तथा मनुष्य का विनाश कर देते हैं। इसलिए हमें धर्म के अनुसार अर्थ और काम का उपयोग करते हुए लक्ष्य सदैव भगवत प्रेम प्राप्ति का रखना चाहिए। श्रीमद् भागवत में कहा है कि जब धर्म लुप्त हो जाता है तब अर्थ और काम में फंसे हुए लोग कुत्ता और बंदरों के समान वर्ण संकर हो जाते हैं।

लब्ध्वा सुदुर्लभमिदं बहुसंभवान्ते, मानुष्यम-र्थदमनीत्यमपीह धीरः। तूर्णं यतेत न पतेदनुमृत्यु यावन् निःश्रेयसाय विषयः खलु सर्वतः स्यात्।।

अर्थात् बहुत सी योनियों (जन्मों) के भटकने के बाद यह अत्यंत दुर्लभ मानव शरीर मिला है। यद्यपि यह भी अनित्य (नाशवान) है, फिर भी यह परम कल्याण (भगवत प्राप्ति) कराने वाला है। इसलिए, बुद्धिमान मनुष्य को मृत्यु आने से पहले ही, बिना समय गंवाए, तुरंत अपने मोक्ष और ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रयास शुरू कर देना चाहिए। क्योंकि इंद्रियों के भोग तो हर योनि (पशु-पक्षी) में भी मिल सकते हैं, लेकिन भगवान को पाने का अवसर केवल मनुष्य जीवन में ही मिलता है।

सनातन धर्म और भारतीय दर्शन के अनुसार भगवत प्राप्ति (ईश्वर की अनुभूति या आत्म-साक्षात्कार) ही मानव जीवन का सर्वोच्च और प्रधान लक्ष्य है।

गोसेवा के संकल्प से गूंजा गोमहिमा कवि सम्मेलन गोग्रास संकलन अभियान को मिला जनसमर्थन

दिल्ली एन.सी.आर– श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा दिल्ली एन.सी.आर.शाखा द्वारा गोग्रास संकलन हेतु दिनांक 17 मई को भव्य गोमहिमा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में गोसेवा, संस्कृति और सामाजिक सहभागिता का अद्भुत संगम देखने को मिला। इस अवसर पर केंद्रीय सड़क परिवहन एवं कॉर्पोरेट मामलात राज्यमंत्री श्री हर्ष मल्होत्रा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्तराखंड गोसेवा आयोग के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी अणथवाल ने की। वहीं दिल्ली सांसद श्री मनोज तिवारी एवं दिल्ली विधायक डॉ. अनिल गोयल अतिविशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ गोमाता के प्रति श्रद्धा और सेवाभाव के साथ हुआ। स्वागताध्यक्ष नंदकिशोर अग्रवाल ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि गोग्रास केवल दान नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा का जीवंत प्रतीक है। उन्होंने उपस्थित गोभक्तों से गोसेवा के इस पावन अभियान में बढ़-चढ़कर सहयोग करने का आह्वान किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने अपने संबोधन में कहा कि गोसेवा भारतीय जीवन पद्धति का महत्वपूर्ण आधार रही है। उन्होंने कहा कि श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा चलाया जा रहा गोग्रास संकलन अभियान समाज को सेवा, संवेदना और संस्कृति से जोड़ने का सराहनीय प्रयास है। उन्होंने गोभक्तों से अपील की कि वे अपने दैनिक जीवन में गोसेवा को स्थान दें और समाज के इस पवित्र कार्य को जन-जन तक पहुँचाएं।

सांसद श्री मनोज तिवारी ने अपने संबोधन में गोमाता को भारतीय संस्कृति की आत्मा बताते हुए कहा कि गोसेवा में किया गया योगदान केवल धार्मिक कार्य नहीं, बल्कि पर्यावरण, कृषि और समाज के कल्याण से जुड़ा हुआ पुण्य कार्य है। उन्होंने कहा कि जब समाज एक भाव से गोमाता की सेवा के लिए आगे आता है, तब सेवा आंदोलन का स्वरूप ले लेती है।

श्री पथमेड़ा न्यास के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राकेश बिंदल ने कार्यक्रम में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के रचनात्मक गोसेवा महाभियान के संस्थापक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज के पावन संकल्पों पर भी प्रकाश डाला। वक्ताओं ने बताया कि वेदलक्षणा गोमाताओं को स्वावलम्बी बनाने तथा देश के विभिन्न शहरों में गोभक्तों को शुद्ध गोउत्पाद उपलब्ध कराने के उद्देश्य से श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की अधिकृत वाणिज्यक इकाई वैदिक गोउत्पाद फाउण्डेशन द्वारा पंचगव्य से निर्मित घी, मिठाइयाँ, पंचगव्य आयुर्वेद औषधियाँ, हर्बल कॉस्मेटिक्स, गोकृषि अन्न एवं गोदुग्धान्न वेदलक्षणा स्टोर तथा ऑनलाइन माध्यम से उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

कार्यक्रम में डॉ हरिओम पंवार, पद्मश्री डॉ सुनील जोगी, अनामिका अम्बर एवं रुची चतुर्वेदी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से गोमाता, भारतीय संस्कृति, सेवा भाव और राष्ट्रधर्म का संदेश दिया। कवि सम्मेलन ने उपस्थित जनसमूह को भावविभोर कर दिया। इस दौरान गोग्रास करने वाले गोभक्तों का अतिथियों द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का सराहनीय संचालन श्री गोधाम पथमेड़ा के सीईओ श्री आलोक सिंहल ने किया। इस दौरान अध्यक्ष डॉ वीरेंद्र गर्ग, एक्जीक्यूटिव चौयरमैन श्री एस.एन. बंसल और मुख्य संरक्षक श्री सुभाष अग्रवाल द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। आयोजन के मनोरथी श्री पुरुषोत्तम बंसल द्वारा कवियों का सम्मान किया गया। अंत में श्री एस एन बंसलजी एवं डॉ वीरेंद्र गर्ग ने धन्यवाद भाषण देते हुए सभी अतिथियों, गोभक्तों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

इस आयोजन में विशेष रूप से सुरेश गर्ग की सेवा और समर्पण की सराहना करते हुए उन्हें सम्मानित किया गपा। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं से लेकर गोग्रास संकलन अभियान को सफल बनाने तक उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया। उपस्थितजनों ने उनके सेवाभाव को प्रेरणादायी बताया।

इस अवसर पर श्री नरेश गोयल, श्री मनोज अग्रवाल, श्री सुरेश गर्ग, श्री यशपाल गुप्ता, श्री आलोक जावावन, श्री हरि:ओम तायल, श्री देवेंद्र जैन, श्री संजय गर्ग, श्री विनय सिंघल, श्री राजीव केजरीवाल, श्री अनिल अग्रवाल, श्री सत्यभूषण जैन, श्री मांगीलाल पारिक, श्री पवन सर्राफ, श्री विष्णुभगवान गोयल, श्री साधुराम गर्ग, श्री प्रकाश कंदोई, श्री अजय गुप्ता, श्री दिनेश कुमार राजपुरोहित, श्री शिवशंकर मित्तल, श्री सांवरमल गोयल, श्री अनिल कांडा, श्री राजेन्द्र केडिया, श्री विनोद गुप्ता, श्री मुरलीधर तायल, श्री संदीप कांडा, श्री एन.आर. जैन, श्री हंसराज रल्हन, श्री रविन्द्र बंसल, श्री अविनाश पारिक, श्री मनोज चढ्ढा, श्री नरेन्द्र गुप्ता, श्री प्रदीप गर्ग, श्री महेंद्र जिंदल, श्रीमती ऋषि उचाना, श्री महावीर गोयल, श्री कुंजबिहारी सिंघल और श्री रघुवीर चंद गर्ग सहित बड़ी संख्या में गोभक्त उपस्थित रहे। कार्यक्रम ने यह संदेश दिया कि गोसेवा केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने वाली एक सकारात्मक और रचनात्मक शक्ति है। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा दिल्ली एन.सी.आर.शाखा का यह आयोजन गोग्रास संकलन अभियान को नई ऊर्जा और जनसमर्थन देने वाला सिद्ध हुआ।

श्री रामचरितमानस अखण्ड रामायण पाठ

कर्णावती। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के तत्वाधान में गोभक्त श्री सुभाषजी रामप्रसाद जी जोड़ीवाल परिवार अहमदाबाद द्वारा श्री सुरभि शक्तिपीठ भाट गाँव गांधीनगर में सुरभि संघ के सानिध्य में दिनांक 23 से 24 मई तक अखण्ड श्री रामचरितमानस पाठ दिव्य और भव्य रूप से आयोजित किया गया।

इस अवसर पर सैंकड़ों गोभक्त कार्यकर्ताओं ने धर्म लाभ लिया तथा गोसेवा और गोपून किया।

चातुर्मास की तैयारियों को लेकर आयोजित हुई सुरभि प्रज्ञा परिषद की अहम बैठक कमेटियों का गठन कर पदाधिकारियों को सौंपी जिम्मेदारियाँ

नंदगाँव । श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास की सुरभि प्रज्ञा परिषद की दो दिवसीय अहम बैठक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री के पावन सानिध्य में 24 और 25 मई 2026 को नंदगांव के अभिनव ब्रजमण्डल स्थित श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ अर्बुदारण्य में आयोजित हुई। बैठक में चातुर्मास की तैयारियों के साथ-साथ गोसेवा, शिक्षा, पंचगव्य आयुर्वेद, गोशाला विकास और समाज हित से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया।

बैठक की शुरूआत गोपूजन और सर्वहितकारी प्रार्थना के साथ हुई। इसके बाद सभापति पूज्य संत श्री गोविन्दवल्लभदास जी महाराज का उद्‌बोधन और बैठक की औपचारिक शुरूआत की गई। बैठक में गो प्रचार-प्रसार को मजबूत करने, वर्षभर होने वाले धार्मिक आयोजनों को प्रभावी बनाने और गोसेवा में जनभागीदारी बढ़ाने को लेकर महत्वपूर्ण चर्चा हुई।

बैठक में पूज्य श्री गोविन्दवल्लभजी महाराज, पूज्य श्री ऋषि चौतन्यजी महाराज, पूज्य श्री नंदरामदासजी महाराज, पूज्य श्री बलदेवदासजी महाराज, पूज्य श्री गोपालदासजी महाराज, पूज्य श्री अनंतदासजी महाराज, श्री रघुनाथसिंह राजपुरोहित, श्री देवारामजी जागरवाल, सीईओ श्री आलोक सिंहल, श्री अर्जुनसिंह तिवरी, श्री ओमप्रकाश गर्ग सहित पदाधिकारियों ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखे। इस दौरान गोधाम महातीर्थ महातीर्थ पथमेड़ा में

प्रस्तावित श्री गो गोपाल सनातन संस्कृती महामंदिर निर्माण परियोजना की जानकारी प्रस्तुत की गई। साथ ही अभिनव ब्रजमंडल में गोसंवर्धन प्रोजेक्ट, गोचर भूमि विकास, डेयरी, गोमूत्र आधारित उत्पाद, साइलेज निर्माण और जैविक चारा उत्पादन जैसे विषयों पर भी चर्चा हुई। बैठक में आयुर्वेदिक पंचगव्य फार्मेसी, गोसदन, कर्मचारी आवास, औषधीय उद्यान और अन्य विकास कार्यो को लेकर भी मंथन हुआ।

अभयारण्य क्षेत्र की 500 बीघा भूमि पर प्रस्तावित नेपीयर घास उत्पादन कार्य की जानकारी भी बैठक में दी गई। परम श्रद्धेय प्रधान संरक्षक गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज के मार्गदर्शन में गो गोपाल कोरीडोर निर्माण समिति, न्यासी बोर्ड, केंद्रीय कार्यकारिणी और सुरभि प्रज्ञा परिषद के गठन का अनुमोदन किया गया।

बैठक में आगामी चातुर्मास आराधना महोत्सव की तैयारियों को लेकर विशेष रूप से चर्चा हुई। चातुर्मास को भव्य और व्यवस्थित रूप देने के लिए विभिन्न कमेटियाँ का गठन किया गया। सुरभि प्रज्ञा परिषद में मौजूद पदाधिकारियों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गई ताकि संतों, विशिष्ट अतिथियों और श्रद्धालुओं के स्वागत, व्यवस्थाओं और कार्यक्रमों को समयबद्ध तरीके से पूरा किया जा सके। बैठक में देशभर के संतों और विशिष्ट अतिथियों को आमंत्रित करने, उनके प्रवास, स्वागत और मार्ग व्यवस्था को लेकर भी योजना बनाई गई। कार्यक्रम से जुड़े सभी कार्यो की समीक्षा के लिए सुरभि प्रज्ञा परिषद की आगामी बैठक 15 जून को आयोजित करने का निर्णय लिया गया। बैठक के अंत में प्रधान संरक्षकजी की अनुमति से अन्य विषयों पर भी विचार-विमर्श किया गया और गोसेवा, धर्मसेवा तथा समाजहित के कार्यो को जनभागीदारी के साथ आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया। बैठक में राव श्री मोहनसिंह चितलवाना, श्री किशोरसिंह नेतरा, श्री हरिसिंह देवड़ा केसुआ, श्री धनराज चौधरी, श्री अम्बालाल सुथार, श्री भरत पुरोहित, श्री ब्रह्मदत्त पुरोहित, श्री भूराराम पुरोहित, श्री रणछोड़ पुरोहित रेवदर, श्री बलवंतराज अनखोल, श्री केवलाराम पुरोहित, श्री मेघराज मोदी, श्री यशपाल गुप्ता, श्री बद्रीदान चारण, श्री बलराम चौधरी सहित सैंकड़ों गोभक्त कार्यकर्ता और पदाधिकारी मौजूद रहे।

आगामी चातुर्मास को लेकर 15 जून को अभिनव ब्रजमण्डल नंदगाँव में आयोजित होगा गोभक्त कार्यकर्ताओं का विशाल सम्मेलन

नंदगाँव। परम पूज्य अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानन्द सरस्वती जी महाराज, शारदा पीठ, द्वारका की पावन सन्निधि में 29 जुलाई से नंदगाँव में आरम्भ होने वाले संतों के चातुर्मास कार्यक्रम की व्यवस्थाओं को लेकर 15 जून को श्री मनोरमा गोलोक धाम, अभिनव ब्रज मण्डल में परम श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज श्री के पावन सानिध्य में- सांचोर, जालोर, सिरोही, बाड़मेर, पाली, उदयपुर, राजसमंद, जोधपुर, पाटन, बनासकांठा, अहमदाबाद, दल्ली, जयपुर, मालवा आदि क्षेत्रों के गोभक्त कार्यकर्ताओं का एक विशाल सम्मेलन आयोजित होना सुनिश्चित हुआ है। अतः समस्त गोभक्त कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि 15 जून को अधिक से अधिक संख्या में पधारकर आगामी आयोजन को सफल बनाने में अपनी महत्ती भूमिका निभावें।

संपर्क सूत्रः- 8209930427, 9995684317, 7073000150

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

गोपाल चूर्ण

गोपाल चूर्ण विशेष रूप से रक्त वाले दस्त के लिए एक बहुत ही उपयोगी हर्बल औषधि है। कब्ज और खून के दस्त होने पर हमारा चूर्ण बहुत ही सफल होता है।

कब उपयोग करें:
कब्ज के दौरान या दस्त में रक्त की मात्रा।

लाभ:
खून की समस्या के साथ कब्ज और दस्त में बेहद फायदेमंद है।

कितनी मात्रा में और कब लें:
प्रतिदिन सुबह और शाम 2-2 चम्मच पानी के साथ या चिकित्सक के निर्देशानुसार।

गोमूत्र हरड़े चूर्ण

हरड़ से संपूर्ण पाचन तंत्र को लाभ होता है। भूख बढ़ाने के लिए कहा जाता है, और पाचन और अवशोषण में वृद्धि होती है। यह बवासीर, दस्त और जठरांत्र संबंधी संक्रमण के लिए एक प्रभावी इलाज प्रदान करता है। पेट की किसी भी समस्या से छुटकारा पाने के लिए आपको वेदलक्षणा गोमूत्र हरड़े चूर्ण की आवश्यकता है। कब्ज, गैस, एसिडिटी और अपच के लिए हरड़ चूर्ण अत्यधिक प्रभावी है। आयुर्वेदिक अभ्यास में, सदियों से इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

कब उपयोग करें:
जब आपको एसिडिटी की शिकायत हो, पाचन की समस्या के कारण गैस हो या कब्ज हो, कृमि के कारण पेट दर्द हो और बवासीर की समस्या हो तो इस चूर्ण का सेवन करना चाहिए।

लाभ:
एसिडिटी से संबंधित समस्या, गैस, कब्ज, पेट में कीड़े और बवासीर में मददगार।

कितनी मात्रा में और कब लें:
प्रतिदिन सुबह और शाम 2-2 चम्मच पानी के साथ या चिकित्सक के निर्देशानुसार।

कुल पृष्ठ-36
जून 2026

प्रकाशन तिथि : 01 जून 2026
कामधेनु कल्याण 20 रूपए

RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No: RJ/SRO/9681/2025-2027

श्रद्धानुसार गोसेवार्थ सहयोग अवश्य करें।

1. एक गोमाता की सेवार्थ गोग्रास राशि प्रतिवर्ष – रु. 21,000/–
2. हरा घास – चारा की एक गाड़ी – रु. 31,000/–
3. सूखे घास की एक गाड़ी – रु. 1,25,000/–
4. अक्षय भू–दान प्रति एक बीघा की राशि – रु. 2,51,000/–
5. जीवन के साथ भी जीवन के बाद भी
   आजीवन गोपालक बनें प्रति गोवंश – रु. 2,51,000/–
6. पौष्टिक आहार की एक गाड़ी की राशि – रु. 5,00,000/–
7. गुड़ की एक गाड़ी की राशि – रु. 4,51,000/–
8. बीमार गोवंश की दवाईयां प्रतिमाह – रु.11,00,000/–
9. पथमेड़ा द्वारा सेवित गोवंश के एक दिन का
   पौष्टिक आहार, हरा एवं सूखा घास चारा – रु. 51,00,000/–
10. आप अपने निवास अथवा प्रतिठान पर नियमित गोग्रास राशि दानपात्र में अर्पित कर सकते हैं।

SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
A/C: 08490100023827, BANK OF BARODA ASHRAM ROAD AHMEDABAD,
IFSC CODE: BARB0ASHRAM (Fifth character is zero)

7742093179, 7073000151, 9760635735